



राष्ट्र को एक सूत्र में बांधते हैं हम

भारत श्री

राष्ट्रीय हिंदी साप्ताहिक

सोमवार, 24 नवंबर 2025 ● वर्ष 7 ● अंक 19 ● मूल्य: 5 रुपए



क्या लौट रहा है 'करोशी'... पेज 18

जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी की ऐतिहासिक घोषणा से गूंजा आदिवासी महासम्मेलन

आदिवासी समाज के लिए जगद्गुरु की ऐतिहासिक पहल, करोड़ों बच्चों के ज्ञान और संस्कार के लिए व्यापक व्यवस्था की घोषणा

@ भारतश्री ब्लूग

दिल्ली में आयोजित आदिवासी युवाओं के महासम्मेलन और युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम 2025 ने इस वर्ष एक ऐतिहासिक अध्याय जोड़ा। देशभर से आए युवा प्रतिनिधियों, आध्यात्मिक गुरुओं और सरकारी अधिकारियों की उपस्थिति में यह आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं रहा, बल्कि एक ऐसा अवसर बना जिसने देश की सांस्कृतिक एकता, युवा संकल्प और आध्यात्मिक दृष्टि को एक ही मंच पर जोड़ दिया। इस पूरे आयोजन का सबसे महत्वपूर्ण क्षण वह रहा जब युवा अतिथि के रूप में पहुंचे अनंत श्री विभूषित जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी ने करोड़ों आदिवासी बच्चों के लिए ज्ञान और संस्कार के व्यापक अभियान की घोषणा की। यह घोषणा न केवल आदिवासी समाज के विकास की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम है, बल्कि यह भी दर्शाती है कि राष्ट्र निर्माण में अध्यात्म और संस्कृति की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण है।

गृहमंत्रालय और खेल मंत्रालय का संयुक्त आयोजन

भारत सरकार के गृह मंत्रालय और खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित आदिवासी युवा महासम्मेलन में देश भर के आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधि, युवा नेता और विभिन्न जनजातीय समूहों के सदस्य बड़ी संख्या में पहुंचे। कार्यक्रम की गरिमा तब और बढ़ गई जब जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी ने मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थिति दर्ज कराई। भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा उनका विशेष रूप से स्वागत किया गया। पूरे परिसर में जब वे पहुंचे, तो युवाओं और अधिकारियों में उत्साह और सम्मान की लहर दिखाई दे रही थी। आयोजन समिति ने यह भी कहा कि इस तरह की अद्वितीय उपस्थिति ने कार्यक्रम के उद्देश्यों को और बल प्रदान किया।

बिरसा मुंडा ने आदिवासी अधिकारों के लिए आवाज उठाई- जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि जी

अपने संबोधन में जगद्गुरु श्री कुमार स्वामी जी ने आदिवासी समाज के संघर्ष, परंपरा और योगदान को सम्मान देते हुए कहा कि बिरसा मुंडा केवल एक नाम नहीं थे, बल्कि वे भारतीय जनजातीय समाज के गौरव और संघर्ष के प्रतीक हैं। उन्होंने बताया कि इस साहस से बिरसा मुंडा ने अपने समुदाय के अधिकारों के लिए आवाज उठाई, वह आज भी हमें प्रेरणा देता है। उन्होंने यह भी कहा कि भारत सरकार ने हाल के वर्षों में आदिवासी समाज



के लिए जो अभूतपूर्व कार्य किए हैं, वे सराहनीय हैं। विकास, शिक्षा, संरक्षण और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने की दिशा में जो योजनाएँ चलाई जा रही हैं, वे आने वाली पीढ़ियों को मजबूत आधार प्रदान करेंगी। इसी संदर्भ में जगद्गुरु द्वारा की गई यह घोषणा कि करोड़ों आदिवासी बच्चों को ज्ञान, शिक्षा और संस्कार देने का अभियान शुरू किया जाएगा, पूरे कार्यक्रम का सबसे प्रभावशाली क्षण बना। यह प्रयास न केवल शिक्षा को बढ़ावा देगा, बल्कि संस्कृति और अध्यात्म के संरक्षण को भी मजबूत करेगा।

आदिवासी बच्चों ने दिखाई अपनी प्रतिभा

मेरा भारत (My Bharat) जिला कार्यालय नई दिल्ली द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न राज्यों से आए युवाओं ने अपनी संस्कृति, अनुभव और विचारों को साझा किया। कार्यक्रम 15 से 21 नवम्बर तक चला और इसमें युवा प्रतिभागियों ने नेतृत्व क्षमता, राष्ट्रीय विकास और सांस्कृतिक विविधता पर खुलकर चर्चा की। युवा प्रतिनिधियों ने बताया कि आज का भारत तेजी से बदल रहा है और युवा इस परिवर्तन के सबसे मजबूत आधार हैं।



कार्यशालाओं से लेकर सामाजिक मुद्दों पर संवाद तक, युवाओं ने सर्वांगीन भागीदारी की। यह कार्यक्रम केवल सीखने का माध्यम नहीं रहा बल्कि एक ऐसा मंच प्रमाणित हुआ जहां युवाओं ने अपनी पहचान, संस्कृति और नेतृत्व क्षमता को अभिव्यक्त किया।

आध्यात्मिकता और नेतृत्व का संगम

कार्यक्रम की विशिष्टता यह रही कि इसमें केवल सरकारी अधिकारी ही नहीं, बल्कि संतों, विचारकों और आध्यात्मिक गुरुओं ने भी युवाओं के साथ संवाद किया। जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी की उपस्थिति ने युवाओं को यह संदेश दिया कि जीवन में केवल शिक्षा या कौशल ही पर्याप्त नहीं, बल्कि संस्कार, दृष्टि और चरित्र भी उतने ही आवश्यक हैं। पूज्य

संत सुधांशु जी महाराज सहित कई आध्यात्मिक और सामाजिक व्यक्तित्वों ने युवाओं को बताया कि नेतृत्व केवल पद का नाम नहीं, बल्कि जिम्मेदारी और सेवा का मार्ग है। उन्होंने कहा कि जब युवा मन साफ दृष्टि, आत्मविश्वास और सादगी के साथ आगे बढ़ते हैं, तो समाज और राष्ट्र दोनों का विकास सुनिश्चित होता है।

युवाओं ने साझा किए अपने अनुभव

प्रतिभागियों ने बताया कि इस कार्यक्रम ने उन्हें न केवल नए अनुभव दिए, बल्कि देश की विविधता को समझने का अवसर भी प्रदान किया। कई युवाओं ने कहा कि पहली बार उन्हें इतने व्यापक स्तर पर विभिन्न राज्यों की संस्कृति, भाषा और परंपराओं को समझने का मौका मिला। एक प्रतिभागी ने कहा कि जब वे अन्य राज्यों के युवाओं के साथ एक मंच पर आते हैं, तो उन्हें महसूस होता है कि भारत केवल नक्शे पर नहीं, बल्कि दिलों की एकता पर बना है।

कई युवाओं ने कहा कि इससे उनके भीतर आत्मविश्वास और संवाद क्षमता बढ़ी है। कुछ युवाओं ने कहा कि वे अपने राज्यों में लौटकर समाज सेवा और जागरूकता के नए कार्यक्रम शुरू करेंगे।

आयोजक मंडल ने कहा कि यह आयोजन केवल न केवल एक-दूसरे के करीब लाते हैं, बल्कि उनमें सहयोग, टीमवर्क और सकारात्मक सोच को भी बढ़ावा देते हैं। उन्होंने बताया कि यह आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक ऐसा महत्वपूर्ण कदम है जो भविष्य के भारत की नींव को मजबूत करता है। इस अवसर पर यह भी कहा गया कि जब आध्यात्मिक चेतना और नेतृत्व का मेल होता है, तब युवा न केवल अच्छा कारण है कि जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी जैसे महान संतों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा और बढ़ा दी।

21 नवम्बर को कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर युवा प्रतिभागियों ने अपने अनुभव साझा किए और उन युवाओं को सम्मानित किया गया। जिन्होंने पूरे कार्यक्रम में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। समापन सत्र में फिर से यह बात दोहराई गई कि भारत का भविष्य तभी मजबूत होगा जब युवा मजबूत होंगे और युवाओं को सही दिशा मिलते ही देश विकास की नई ऊँचाइयों को छुएगा।



ORDER ALL TYPES OF :

- POOJA SAMAGRI,
- AYURVEDIC MEDICINE
- AND PRATIMA.



NOW GET AT YOUR HOME ON
MNDIVINE.COM



ORDER NOW



<https://mndivine.com/>

HELPLINE : 9667793986
(10AM TO 6PM, MON-SAT)



दिल्ली में प्रदूषण विरोध की आड़ में हिडमा के समर्थन के नारे, बड़ा खेल उजागर

① आनंद मीणा

दि

ल्ली की हवा इन दिनों वैसे ही जहरीली है कि लोग बिना मास्क सड़क पर निकलने से डरते हैं। रविवार की दोपहर इंडिया गेट के आसपास वही धुंध और वही बेचैनी छाई थी। लेकिन उस दिन हवा में सिर्फ प्रदूषण नहीं था, बल्कि कुछ ऐसा भी था जिसने पूरे माहौल को अचानक राजनीतिक रंग दे दिया। लोग प्रदूषण के खिलाफ आवाज उठाने पहुंचे थे, लेकिन देखते ही देखते यह प्रदर्शन एक बिल्कुल अलग दिशा में मुड़ गया।

इंडिया गेट पर जुटी भीड़, मास्क के पीछे छिपा रहस्य

रविवार को इंडिया गेट के पास दर्जनों लोग मास्क पहनकर पहुंचे और खुद को प्रदूषण के खिलाफ प्रदर्शनकारी बताया। हाथों में पोस्टर थे, जिन पर लिखा था कि दिल्ली की हवा जानलेवा होती जा रही है और सरकार को इस पर तुरन्त कदम उठाना चाहिए। भीड़ शांत थी और लोग सामान्य विरोध की तरह दिख रहे थे। पुलिस भी सावधान थीं लेकिन तनाव नहीं था।

लेकिन यह सज्जाता ज्यादा देर टिक नहीं पाया

जैसे ही कुछ लोग आगे बढ़े, उनके हाथों में अचानक नए पोस्टर दिखाई देने लगे। पोस्टर पर लिखा था -हिडमा अमर रहे। यह देखकर लोग हैरान रह गए क्योंकि हिडमा वही कुख्यात नक्सली कमांडर था, जिसे हाल ही में एनकाउंटर में मार गिराया गया था। और फिर हवा में गूंज उठा नारा -तुम कितने हिडमा मारोगे, हर घर से हिडमा निकलेगा यह नारा किसी प्रदूषण विरोधी आंदोलन का हिस्सा नहीं था। यह नारा किसी और मक्सद का संकेत दे रहा था। पुलिस के लिए भी यह पल अचानक और चौंकाने वाला था।

प्रदर्शन का रूप बदल गया, पुलिस ने तुरंत कार्रवाई की

जैसे ही नारेबाजी शुरू हुई, पुलिस को अंदाजा हो गया कि यह भी सिर्फ प्रदूषण की बात करने नहीं आई है। कुछ लोग बैरिकेट्स की ओर बढ़े और कुछ ने मिर्ची स्प्रे तक निकाल लिया। पुलिस ने तेजी से कार्रवाई की, भीड़ को तितर-बितर किया और कई लोगों को हिरासत में लिया। तालुकदार पत्रकारों के कैमरे चलने लगे। लाइव स्ट्रीम शुरू हो गई वीडियो सोशल मीडिया पर फैलने लगे। एक सामान्य दिखने वाला पर्यावरण विरोध अचानक एक राजनीतिक और सुरक्षा से जुड़े मसले में बदल गया था।

वीडियो वायरल, बीजेपी प्रवक्ता सुधांशु त्रिवेदी का हमला

अगले ही दिन सोशल मीडिया पर छाए वीडियो ने राजनीति को गर्मा दिया। सोमवार को पत्रकारों से बातचीत करते हुए बीजेपी प्रवक्ता और सांसद सुधांशु त्रिवेदी ने तीखा बयान दिया। उन्होंने कहा कि यह प्रदर्शन प्रदूषण के खिलाफ नहीं था। इसका असली मक्सद छिपाया गया था।



जैसे ही प्रदर्शनकारी पहुंचे, उनका असली चेहरा सामने आ गया। उन्होंने बताया कि कुछ लोग मास्क पहनकर आए ताकि लगे कि वे प्रदूषण पर बात करने आए हैं। लेकिन जैसे ही भीड़ इकट्ठी हुई, मास्क उतर गए और नारेबाजी शुरू हो गई, वह भी उस नक्सली हिडमा के समर्थन में, जिसने देश के कई निर्दोष लोगों की जान ली थी। त्रिवेदी ने इसे बेहद खतरनाक बताया और कहा कि यह एक राजनीतिक एजेंडे को छुपाने का तरीका था।

“हवा से ज्यादा दिमाग में जहर”

पत्रकारों से बात करते हुए उन्होंने प्रधानमंत्री के बयान का भी जिक्र किया, जिसमें कहा गया था कि विपक्ष

के समर्थन का मंच कैसे तैयार हो गया। दिल्ली जैसे संवेदनशील क्षेत्र में और इंडिया गेट जैसे राष्ट्रीय स्मारक के पास ऐसा प्रदर्शन करना सुरक्षा एजेंसियों की चिंता बढ़ाता है। नक्सली हिडमा का नाम देश में अपराध, हिंसा और आतंक की घटनाओं से जुड़ा है ऐसे में किसी भी भीड़ द्वारा “हिडमा अमर रहे” के नारे लगाना लोकतंत्र के लिए खतरे की ओटी है।

डर और भ्रम दोनों

इंटरनेट पर वीडियो वायरल होने के बाद लोगों ने तरह-तरह की प्रतिक्रियाएँ दीं। कई लोगों ने कहा कि प्रदूषण इतना बड़ा मुद्दा है कि उस पर राजनीति नहीं होनी चाहिए। दूसरों ने कहा कि नक्सलवाद का समर्थन किसी भी रूप में खतरनाक है और ऐसी भीड़ को तुरंत रोका जाना चाहिए। तीसरी ओर लोग असली प्रदर्शनकारियों और भटके हुए समूहों में फर्क करने की मांग भी कर रहे हैं। यह घटना बता रही है कि किसी भी प्रदर्शन को आसानी से किसी अन्य दिशा में मोड़ा जा सकता है। जब प्रदर्शन के पीछे वास्तविक मुद्दा छुपा दिया जाता है, तब न केवल आंदोलन की गंभीरता कम होती है, बल्कि लोगों का भरोसा भी टूटता है।

ये सवाल अब भी बाकी है कि क्या यह प्रदर्शन पहले से ही इस मक्सद के साथ तैयार किया गया था या बीच में कुछ लोग अचानक भीड़ में शामिल हो गए। पुलिस इन दोनों संभावनाओं की जांच कर रही है। मास्क पहनकर आए लोग जब नक्सलवाद के समर्थन में नारे लगाते हैं, तब मामला सिर्फ पर्यावरण का नहीं रह जाता। वह एक गहरा राजनीतिक और सुरक्षा का विषय बन जाता है।

शपथ, सत्यपेंशन और सियासी बयानबाजी

प्रोटेम स्पीकर से लेकर कांग्रेस की कार्रवाई तक, बिहार में एक दिन, कई खबरें



@ मनीष पांडेय

नीतीश कुमार ने नई सरकार के गठन के साथ ही बिहार की राजनीति का तापमान फिर बढ़ा दिया है। विधानसभा में नई जिम्मेदारी, दिल्ली में नेताओं की हलचल, कांग्रेस में अनुशासनात्मक कार्रवाई और बीजेपी की तीखी प्रतिक्रियाओं ने माहौल को पूरी तरह बदल दिया है। यह सब कुछ ऐसे घटा जैसे एक तेज बहाव वाली नदी में कई धाराएं एक साथ दौड़ती हैं।

नरेंद्र नारायण यादव की एंट्री

सुबह की शुरुआत राजनीतिक शपथ की चर्चा से हुई। जेडीयू के अनुभवी विधायक नरेंद्र नारायण यादव को बिहार विधानसभा का प्रोटेम स्पीकर बनाया गया। यह पद अस्थायी माना जाता है लेकिन इसका

महत्व बहुत बड़ा है। विधानसभा के पहले सत्र में सभी नवनिर्वाचित विधायकों को शपथ दिलाने की जिम्मेदारी इन्हीं पर होगी। राज्यपाल की ओर से नियुक्त यह पद नए सत्र का पहला दरवाजा खोलता है। शपथ ग्रहण का माहौल हमेशा गंभीर और गरिमामय होता है। नए चेहरे, नई उम्मीदें और नई सरकार की शुरुआत इसी मंच पर दिखाई देती है।



इसके बाद स्थायी स्पीकर का चुनाव होगा जहां बीजेपी के वरिष्ठ नेता प्रेम कुमार के नाम की चर्चा तेज है।

सात नेताओं को बाहर कारास्ता

दूसरे अध्याय में कांग्रेस का अनुशासन सामने आया। रात तक आते आते पार्टी ने अपने सात नेताओं को कड़ा दंड सुनाया। सभी पर आरोप था कि टिकट बंटवारे को लेकर पार्टी पर गंभीर आरोप लगाए गए। कांग्रेस ने अपने पत्र में लिखा कि इन नेताओं ने संगठन की मर्यादा तोड़ी और सार्वजनिक रूप से पार्टी विरोधी बयान दिए। निष्कासित नेताओं की सूची साफ बताती है कि विवाद अलग अलग जिलों में फैला था। कोई सेवा दल से था, कोई युवा कांग्रेस का पूर्व अध्यक्ष, कोई किसान विंग का प्रतिनिधि। इतने अलग हिस्सों से एक ही प्रकार के आरोप उठना यह दिखाता है कि अंदरखाने में असंतोष गहरा था।

मुकेश सहनी का बयान

इसके बाद आया बयान जो राजनीति की हवा को और गर्म कर गया। वीआईपी चीफ मुकेश सहनी ने दावा किया कि बीजेपी ने सप्ताह चौथरी को गृह विभाग देकर नीतीश कुमार के हाथ से मुख्यमंत्री का पद भी छीनने की तैयारी कर ली है। उनके शब्द सीधे थे और संकेत



साफ कि NDA सरकार के भीतर सामंजस्य की परीक्षा अभी बाकी है। इसके साथ उन्होंने तेजस्वी यादव को लेकर भी टिप्पणी की। चुनाव हारने के बाद तेजस्वी मीडिया के सामने नहीं आए हैं। सहनी का कहना था कि तेजस्वी जल्द सामने आएंगे। यह बयान इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि विषयकी ओर से अब तक चुप्पी जैसी स्थिति बनी हुई है।

उपेंद्र कुशवाहा ने याद दिलाई पुरानी बात

उसी दिन उपेंद्र कुशवाहा का एक पोस्ट सोशल मीडिया पर चर्चा में आ गया। उन्होंने पुरानी बात याद करते हुए लिखा कि बड़े भाई नीतीश कुमार ने एक बार



कहा था कि खाना खाते समय मक्खियां परेशान करते तो चिंता न करें। एक हाथ से उन्हें हटाते रहें और दूसरे हाथ से खाना खाते रहें। यह वाक्य कुशवाहा ने बिना

किसी नाम के लिखा, लेकिन संदेश स्पष्ट था। राजनीति में शोर, विरोध और आलोचना लगातार चलते रहेंगे, लेकिन काम रुकना नहीं चाहिए। यह पोस्ट ऐसे समय आया जब राजनीति में लगातार बयानबाजी की हलचल जारी थी।

तेजस्वी का परिवार दिल्ली रवाना

दोपहर होते होते एक और तस्वीर सामने आई।

पटना एयरपोर्ट पर तेजस्वी यादव का परिवार कैमरे में कैद हुआ। उनकी पत्नी बच्चों के साथ दिल्ली रवाना हो रही थीं। तेजस्वी चुनाव नतीजों के बाद से चुप हैं। यह चुप्पी कई सवाल भी उठाती है और कई अनुमान भी पैदा करती हैं। दिल्ली रवाना होना शायद परिवार की निजी यात्रा हो, लेकिन सियासी गलियारों में हर कदम की अलग व्याख्या होती है।

गिरिराज सिंह का हमला

शाम होते होते दिल्ली से एक कड़ा बयान आया। केंद्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने SIR मुद्दे पर राहुल गांधी की

टिप्पणी को लेकर तगड़ा हमला बोला। उनका कहना था कि राहुल गांधी और प्रियंका गांधी पूरे बिहार में तेजस्वी यादव के साथ घूमे, लेकिन जनता ने

उन्हें स्पष्ट संदेश दे दिया। उन्होंने कहा कि SIR कांग्रेस के समय में भी होता था और यह जरूरी प्रक्रिया है। गिरिराज ने आरोप लगाया कि कांग्रेस इस मुद्दे को उठाकर अराजकता फैलाने की कोशिश कर रही है।

यह बयान इस बात का संकेत था कि आने वाले समय में विषय और सत्ता पक्ष के बीच SIR को लेकर राजनीतिक गर्मी बढ़ेगी।

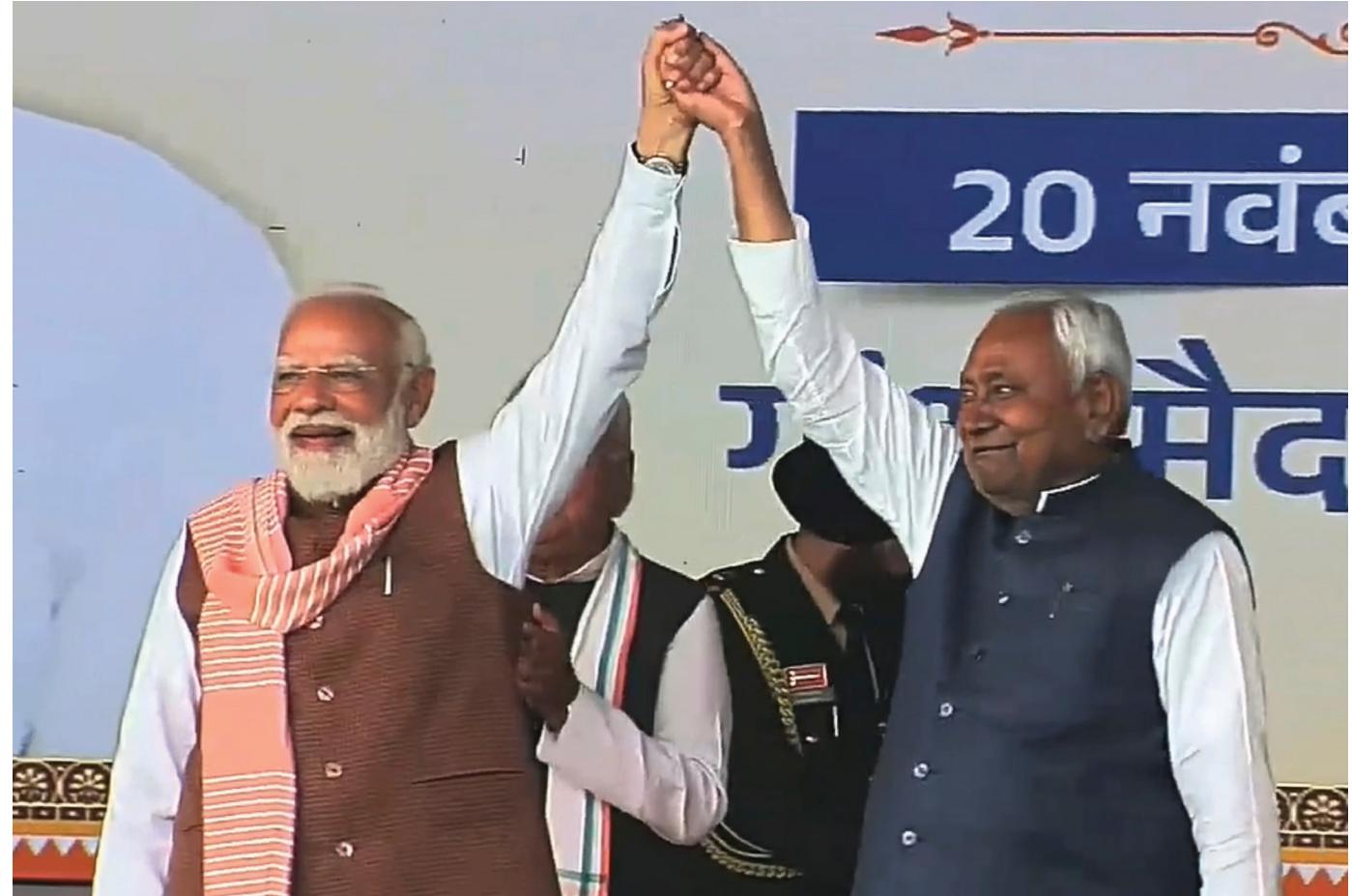
नीतीश का दसवां सूरजः बिहार में स्थिरता की रोशनी

दसवीं बार शपथः बिहार की सियासत में एक नया मोड़

पूर्णा के गांधी मैदान में 20 नवंबर 2025 को हमेशा याद रहेगी। नीतीश कुमार ने दसवीं बार बिहार के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। यह सिर्फ एक समारोह नहीं था, बल्कि एनडीए की भारी जीत का जश्न था, जहां गठबंधन ने 243 सीटों में से 202 सीटें हासिल कीं। जनता दल यूनाइटेड (जेडीयू) को 98 सीटें मिलीं, जबकि भाजपा ने 89 सीटों पर कब्जा जमाया। हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (एचएएम) और लोक जनशक्ति पार्टी (आरवी) जैसे सहयोगियों ने भी अपनी भूमिका निभाई। शपथ ग्रहण में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा जैसे बड़े नेता पहुंचे। मोदी ने नीतीश को गमछा भेट कर उनका सम्मान किया, जो सादगी और साझेदारी का प्रतीक बना। नीतीश की यह दसवीं पारी 1985 से शुरू हुई उनकी राजनीतिक यात्रा का हिस्सा है। उन्होंने कहा कि बिहार को भारत के सबसे विकसित राज्यों में शुमार करना उनका लक्ष्य है। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह स्थिरता बिहार की जड़ों तक पहुंचेगी? राज्य अभी भी गरीबी, बेरोजगारी और प्रवासन की चुनौतियों से जूझ रहा है। एनडीए की जीत ने विपक्ष को पीछे धकेल दिया, जहां आरजेडी को सिर्फ 35 सीटें मिलीं। तेजस्वी यादव ने हार मानी, लेकिन उम्मीद जताई कि नई सरकार वादे निभाए। यह शपथ सिर्फ कुर्सी हासिल करना नहीं, बल्कि बिहार के लोगों को नई दिशा देने का वादा है। नीतीश की सियासी चालाकी ने उन्हें कई बार संकट से बाहर निकाला है, लेकिन अब फोकस विकास पर होना चाहिए। क्या यह दसवीं पारी आखिरी साबित होगी या बिहार को नई ऊँचाइयों पर ले जाएगी? समय ही जवाब देगा, लेकिन लोगों की निगाहें नीतीश पर टिकी हैं।

वैश्विक पटल पर बिहारः स्थिरता की छवि मजबूत

दुनिया की नज़रें बिहार पर हमेशा कम ही पड़ती हैं, लेकिन नीतीश कुमार की दसवीं शपथ ने अंतर्राष्ट्रीय मीडिया को झकझोर दिया। बीबीसी ने इसे 'मोदी के सहयोगी की भारी जीत' करार दिया, जहां एनडीए की सफलता को राष्ट्रीय राजनीति में स्थिरता का संकेत बताया। रिपोर्ट में कहा गया कि बिहार जैसे गरीब राज्य में यह जीत मोदी सरकार के लिए राहत है, खासकर 2024 के लोकसभा चुनावों के बाद जब गठबंधन कमज़ोर पड़ा था। रॉयटर्स ने लिखा कि यह नतीजा नीतिगत निरंतरता लाएगा, जो निवेशकों के लिए अच्छा संकेत है। बिहार की 13 करोड़ आबादी और इसकी आर्थिक चुनौतियां वैश्विक रिपोर्टों में उभरीं, जहां नीतीश को 'सुशासन बाबू' कहा गया। अल जजीरा जैसे चैनलों ने पुरानी कवरेज में नीतीश की भूमिका पर सवाल उठाए थे, लेकिन अब फोकस सकारात्मक है – विकास और कानून-व्यवस्था पर। अमेरिकी और यूरोपीय मीडिया ने इसे भारत की संघीय व्यवस्था का उदाहरण माना, जहां क्षेत्रीय नेता राष्ट्रीय एजेंडे को मजबूत करते हैं। विश्व बैंक और गेट्स फाउंडेशन जैसे संगठन पहले से बिहार के स्वास्थ्य और शिक्षा मॉडल की तारीफ कर चुके हैं, और अब उम्मीद है कि यह नई सरकार वैश्विक साझेदारियों को बढ़ाएगी। लेकिन सवाल बाकी हैः क्या बिहार का मॉडल अफ्रीका



या एशिया के गरीब इलाकों के लिए प्रेरणा बनेगा? अंतरराष्ट्रीय विश्लेषकों का मानना है कि नीतीश की स्थिरता मोदी की विदेश नीति को मजबूत करेगी, लेकिन बेरोजगारी और जातिगत समीकरण वैश्विक छवि को प्रभावित कर सकते हैं। कुल मिलाकर, यह घटना बिहार को वैश्विक नक्शे पर थोड़ा ऊपर लाई है, जहां स्थिरता को विकास की कुंजी माना जा रहा है। क्या यह सिर्फ सुर्खियां होगी या बिहार असल में बदलाव का केंद्र बनेगा?

मंत्रिमंडल के चेहरे: अनुभव, संतुलन और नई उम्मीदें

नीतीश कुमार के नए मंत्रिमंडल में 27 सदस्य हैं, जो जातिगत संतुलन, अनुभव और युवा ऊर्जा का मिश्रण दिखाते हैं। दो उपमुख्यमंत्री – सम्प्राट चौधरी (भाजपा) और विजय कुमार सिन्हा (भाजपा) – ने शपथ ली। सम्प्राट, कोइरी समुदाय से आते हैं, भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष रहे और किसान मुद्दों पर मुखर। विजय, कायस्थ पृष्ठभूमि के, पूर्व स्पीकर हैं और विधायी अनुभव से लबालब। जेडीयू से अशोक चौधरी (यादव) लंबे समय से नीतीश के साथी हैं, ग्रामीण विकास पर फोकस रखते हैं। विजय चौधरी ऊर्जा मंत्री रह चुके, जबकि श्रवण कुमार स्वास्थ्य क्षेत्र के जानकार। महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिला – श्रेयसी सिंह (भाजपा), ओलंपिक निशानेबाज और जमशेदपुर की सांसद की बेटी, पहली बार मंत्री बनीं; लेशी सिंह (जेडीयू), पूर्व कांग्रेसी, मजबूत संगठनकर्ता; और रामा निषाद (जेडीयू), निषाद समुदाय से, सामाजिक न्याय की पैरोकार। मुस्लिम चेहरा मोहम्मद जामा खान (जेडीयू) अल्पसंख्यक कल्याण पर नजर रखेंगे। भाजपा

से दिलीप जायसवाल, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, संगठन कौशल के लिए मशहूर; गिरिराज सिंह, केंद्रीय मंत्री, सञ्चात छवि; और नित्यानंद राय, पूर्व पुलिस अधिकारी। दलित नेता जीतन राम मांझी (एचएएम), पूर्व सीएम, महादलित कल्याण पर जोर देंगे। चंदन सिंह (लोजपा-आरवी) युवा चेहरा हैं। यह मंत्रिमंडल 14 भाजपा, 8 जेडीयू, 1 एचएएम और 1 लोजपा से बना, जो एनडीए की एकता दिखाता है। खास बात यह है कि 10 नए चेहरे शामिल हैं, जो ताजगी लाएंगे। लेकिन चुनौती संतुलन बनाए रखना होगी। क्या ये नाम बिहार को नई दिशा देंगे?

चुनौतियां सामने: विकास की राह में कांटे

नीतीश की दसवीं पारी में बिहार की पुरानी समस्याएं नई चुनौतियां बनकर खड़ी हैं। राज्य अभी भी भारत का सबसे गरीब हिस्सा है, जहां प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय औसत से आधी है। बेरोजगारी दर 15 फीसदी के करीब, जिससे युवा दिल्ली-मुंबई पलायन कर रहे हैं। नीतीश ने बाद किया है कि 10 लाख नौकरियां पैदा होंगी, लेकिन पिछले कार्यकालों में योजनाएं अधर में लटक गईं। अपराध दर घटी है, लेकिन महिलाओं पर अत्याचार और जातिगत हिंसा अभी भी चिंता का विषय। बजट घाटा 4 फीसदी से ऊपर, केंद्र से विशेष पैकेज की जरूरत। शिक्षा और स्वास्थ्य में सुधार हुआ, लेकिन स्कूलों में शिक्षक कम हैं और अस्पतालों में दवा की कमी। पर्यावरणीय संकट जैसे बाढ़ और सूखा बिहार को सालाना प्रभावित करते हैं। विपक्ष का आरोप है कि एनडीए की जीत जातिगत समीकरण पर टिकी, विकास पर नहीं। तेजस्वी ने कहा कि सरकार बादे भूलेगी। लेकिन नीतीश की

ताकत उनकी सादगी और कार्यान्वयन क्षमता है। खास बात यह कि मंत्रिमंडल में महिलाओं और अल्पसंख्यकों का प्रतिनिधित्व बढ़ा, जो सामाजिक न्याय की दिशा में कदम है। वैश्विक नज़रों में बिहार को निवेश के लायक बनाना होगा। क्या यह सरकार प्रवासन रोक पाएगी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मजबूत करेगी? सवाल गंभीर हैं, लेकिन उम्मीद भी बंधी है। स्थिरता से अब कार्रवाई की बारी है।

साझा सफरः केंद्र के साथ बिहार का नया दौर

एनडीए की मजबूत साझेदारी से बिहार को केंद्र की योजनाओं का पूरा लाभ मिलेगा। नीतीश ने कहा कि मोदी के नेतृत्व में बिहार तेजी से बढ़ेगा। सड़क, रेल और एयर कनेक्टिविटी पर फोकस होगा, जैसे गंगा एक्सप्रेसवे और पटना मेट्रो। विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजेड) से निवेश लाने का प्लान है। कृषि सुधारों से किसानों को राहत, जहां डबल इंजन सरकार का फायदा दिखेगा। पर्यटन को बढ़ावा देकर बोधगया और नालंदा को वैश्विक केंद्र बनाना लक्ष्य। लेकिन सवाल उठता है कि क्या यह साझेदारी जातिगत राजनीति से ऊपर उठेगी? नीतीश की चालाकी ने कई गठबंधन तोड़े, लेकिन अब भाजपा के साथ स्थिरता है। खास बात यह है कि बजट में बिहार को 1 लाख करोड़ का पैकेज मिल सकता है। युवाओं के लिए स्कूल सेंटर और स्टार्टअप को प्रोत्साहन। पर्यावरण पर काम से जलवायु परिवर्तन का सामना। वैश्विक स्तर पर यह बिहार को भारत की ग्रोथ स्टोरी का हिस्सा बनाएगा। लेकिन सफलता लोगों की भागीदारी पर निर्भर। क्या नीतीश अपनी विरासत को मजबूत करेंगे? समय बताएगा।

सोमवार, 24 नवंबर 2025, विक्रम संवत् 2080

क्या भारत को पुरानी साम्यवादी सोच से निकलना होगा?

भारत में जो भी अर्थनीति बनी है वह साम्यवादियों के प्रभाव से बनी है साम्यवादियों की इच्छा अनुसार ही नेहरू जी ने यह नीति बनाई जिसके अनुसार

श्रम शोषण और आर्थिक असमानता को प्रोत्साहित किया गया। साम्यवादी शुरू से यह चाहते थे कि श्रम का मूल्य न बढ़े और आर्थिक असमानता लगातार बढ़ती रहे तभी गरीब और अमीर के बीच में टकराव पैदा होगा और उस टकराव से साम्यवाद मजबूत होगा। इसीलिए साम्यवादियों में हमेशा यह प्रयत्न किया की डीजल पेट्रोल बिजली यह सब सस्ता रहे श्रम सस्ता रहे उद्योग धंधे बढ़ते रहे लोगों को सरकारी नौकरी दी जाए। साम्यवादियों ने हमेशा कोशिश की कि बाजार में रोजगार न पैदा हो श्रम का मूल्य बढ़ाया जाए बाजार में ना बढ़े। आज भी भारत का इस कम्युनिस्ट निरंतर यह प्रयास करता रहता है की सरकारी नौकरियां दी जाएं तुर्के अधिक से अधिक सुविधाएं दी जाए डीजल बिजली पेट्रोल सब सस्ता हो श्रम का मूल्य बढ़ाया जाए जिससे श्रम कम बाजार मूल्य कम से कम रहे। नेहरू जी तो लगातार इस नीति पर चल ही रहे थे लेकिन वर्तमान सरकार भी इस अर्थनीति को अभी बदलने खतरनाक मान रही है। वैसे तो सारी दुनिया ही इस नीति पर चल रही है लेकिन भारत के लिए यह नीति बहुत खतरनाक है। मेरे विचार से वर्तमान समय में श्रम का मूल्य घटा दिया जाना चाहिए सरकारी नौकरी का वेतन कम कर दिया जाए डीजल पेट्रोल बिजली का मूल्य बढ़ा दिया जाए। सारी अर्थव्यवस्था ठीक हो जाएगी।

बजरंग मुनि

प्रदूषण के बहाने नक्सल एजेंडा



@ अनुराग पाठक

दिल्ली की सर्दियों में स्माँग हर साल लौटता है। चिंता हर बार वही होती है कि हवा में जहर घुल गया है और आम लोग सांस लेने के अधिकार के लिए जूझ रहे हैं। प्रदूषण आज असली संकट है और इससे इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन पिछले कुछ दिनों में इंडिया गेट पर जो दृश्य सामने आया उसने एक नया और खतरनाक सवाल खड़ा कर दिया है। क्या प्रदूषण की आड़ में फिर से वही पुराना एजेंडा लौट आया है जिससे देश दशकों तक जूझता रहा है इंडिया गेट पर शुरू हुआ प्रदर्शन पहले एक सामान्य जनभावना की तरह दिखा। लोगों के हाथों में पोस्टर थे। बच्चे मास्क पहने थे। बुजुर्गों ने हवा साफ करने की मांग की। जनता का यह गुस्सा जायज था। लेकिन चंद घंटों में इस प्रदर्शन का स्वरूप बदलने लगा। कुछ चेहरे अचानक भीड़ में उभर आए जिनका उद्देश्य हवा साफ करना नहीं बल्कि माहौल को धुंधला करना था। नारों की भाषा बदल गई। तख्तियां बदल गईं। और मुद्दे भी बदल गए। यही वह मोड़ था जहां प्रदूषण के खिलाफ आवाज उठाने वाले दिल्लीवासी पीछे छूट गए और मंच पर ऐसी बातें होने लगीं जिनका पर्यावरण से कोई संबंध नहीं था। जिन नारों की गूंज कभी जंगलों से आती थी वे देश की राजधानी में हवा की लड़ाई के नाम पर दोहराए जाने लगे। यह संयोग नहीं बल्कि रणनीति थी। पुराने नेटवर्क के कुछ सक्रिय तत्व प्रदूषण जैसे संवेदनशील मुद्दे को अपने लक्ष्य के लिए इस्तेमाल करने लगे। यह बदलाव सामान्य नहीं था और यही वजह है कि सवाल उठना जरूरी है।

किसी भी लोकतंत्र में प्रदर्शन जनता की ताकत होते हैं। लेकिन जब जनता की आवाज को संगठित एजेंडा धंधला कर दे तब चेतावनी दी जानी चाहिए। प्रदूषण को लेकर दिल्ली की पीड़ा असली है। लेकिन उसकी आड़ में यदि ऐसा समूह सक्रिय हो जो देश के भीतर अविश्वास फैलाना चाहता है तो यह केवल पर्यावरण का प्रश्न नहीं रह जाता। यह सुरक्षा और स्थिरता का सवाल बन जाता है नक्सल विचारधारा की जड़ें हमेशा असंतोष के बीच पनपती रही हैं। वे वहां प्रवेश करते हैं जहां लोग सवाल पूछ रहे होते हैं। वे उन मुद्दों से चिपकते हैं जहां जनता का धैर्य टूट चुका होता है। प्रदूषण ऐसा ही मुद्दा है। लोग परेशान हैं और समाधान दूर दिखाई देता है। ऐसे में अगर कोई समूह पीड़ा में अपनी वैचारिक बेचैनी मिलाने की कोशिश कर रहा है तो यह लोकतंत्र को कमज़ोर करने की कोशिश है।

दिल्ली की हवा साफ होनी चाहिए। इसके लिए सरकारों को जवाबदेह ठहराना भी जरूरी है। पर इसके साथ यह भी उतना ही जरूरी है कि किसी भी बड़े सामाजिक मुद्दे पर असल आवाज को गलत दिशा में मोड़ा न जाने दिया जाए। प्रदर्शन में शामिल हर नागरिक को सतर्क रहना होगा कि वह अनजाने में किसी छुपे हुए अभियान का हिस्सा न बन जाए। जो लोग प्रदूषण के नाम पर नक्सल एजेंडा को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं वे न तो पर्यावरण के हितेंही हैं और न ही जनता के साथी। वे केवल अवसरवादी हैं जो हर संकट में संभावना खोजते हैं। दिल्ली की जनता को उनकी इस चाल को पहचानना होगा। क्योंकि हवा साफ करने की लड़ाई गंभीर है और इसे ऐसे हाथों में नहीं छोड़ा जा सकता जिनका लक्ष्य कुछ और है।

जुबानी तीर

“

SIR के नाम पर पूरे देश में अव्यवस्था

फैलाई गई है।



नतीजा यह है कि तीन हफ्तों में 16 BLO की मौत हो चुकी है। SIR कोई सुधार नहीं, बल्कि थोपी गई तानाशाही है।

“

जब घर-घर जाकर मतदाता

सत्यापन हुआ



था, तो इनके योग्य मतदाताओं के नाम कैसे हटाए गए? क्या चुनाव आयोग इस गंभीर मुद्दे पर कोई कार्रवाई करेगा?

“

हम SIR प्रक्रिया का स्वागत

करते हैं क्योंकि



इससे मतदाता सूची साफ होती है और फर्जी वोटिंग रुकती है। स्टालिन की आलोचना इसलिए है क्योंकि उन्हें 2026 के चुनाव में हार का



सर्दी का मौसम अपने साथ कई तरह की चुनौतियाँ लेकर आता है। तापमान गिरने पर शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होने लगती है और कई लोग खांसी, जुकाम, बुखार, जोड़ों का दर्द, त्वचा से जुड़ी समस्याएँ और पाचन संबंधी परेशानियों का सामना करते हैं। आधुनिक जीवनशैली में अचानक तापमान में बदलाव, कम धूप मिलना, अनियमित खानपान और देर रात तक जागना इन समस्याओं को और बढ़ा देता है।

आयुर्वेद के अनुसार सर्दी का मौसम वह समय है जब शरीर को अतिरिक्त ऊर्जा, गर्माहट और पाचन शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता होती है। आयुर्वेद केवल बीमारियों से बचाव पर नहीं, बल्कि शरीर को इस तरह मजबूत बनाने पर जोर देता है कि बीमारी होने की संभावना ही कम हो जाए। नीचे ठंड में होने वाली आम बीमारियों और उनसे बचाव के आयुर्वेदिक और प्राकृतिक उपाय विस्तार से दिए गए हैं।

1. सर्दी और जुकाम से बचाव के आयुर्वेदिक उपाय

ठंड के मौसम में सर्दी और जुकाम सबसे आम समस्या है। आयुर्वेद के अनुसार यह वात और कफ दोष के बढ़ने से होता है।

अदरक और तुलसी की चाय

अदरक शरीर को गर्म रखता है और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। तुलसी बैक्टीरिया और वायरस से बचाती है।

एक कप पानी में 4–5 तुलसी की पत्तियाँ, अदरक का छोटा टुकड़ा और थोड़ा-सा गुड़ मिलाकर चाय बनाएं। दिन में दो बार पीना लाभकारी है।

हल्दी वाला दूध

हल्दी में प्राकृतिक एंटीसेप्टिक गुण होते हैं। रात को हल्दी दूध पीने से गले में जमाव नहीं होता और सर्दी से बचाव होता है।

भाप लेना

दिन में एक बार गर्म पानी की भाप लेने से नाक और गले में जमा बलगम साफ होता है और बंद नाक की समस्या कम होती है।

2. खांसी से राहत के आयुर्वेदिक तरीके

मुलेठी

मुलेठी गले को चिकनाहट देती है और सूखी खांसी में आराम पहुँचाती है। मुलेठी का छोटा टुकड़ा चूसना लाभदायक है।

शहद और काली मिर्च

एक चम्चम शहद में आधा चुटकी काली मिर्च मिलाकर सुबह-शाम लेने से खांसी कम होती है और गला साफ रहता है।

लौंग

भुनी हुई लौंग को पाउडर कर के शहद के साथ लेने से ठंड से होने वाली खांसी में आराम मिलता है।

3. बुखार और सर्दी लगने की समस्या

जब शरीर को ठंड लग जाती है, तो हल्का बुखार आ सकता है। आयुर्वेदिक उपायों से शरीर को गर्माहट मिलती है।

अदरक का काढ़ा

अदरक, दालचीनी, तुलसी, काली मिर्च और गुड़ मिलाकर बनाया गया काढ़ा प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और बुखार को कम करता है।

गर्म तेल से मसाज

सरसों के तेल में थोड़ा-सा लहसुन या अजवाइन

ठंड में होने वाली बीमारियों से बचाव के आयुर्वेदिक तरीके



ड्रिफ्ला

रात को ड्रिफ्ला लेने से पाचन सुधरता है और त्वचा पर इसका सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है।

4. जोड़ों के दर्द से बचाव के आयुर्वेदिक उपाय

ठंड के मौसम में वात दोष बढ़ता है, जिसके कारण जोड़ों में दर्द, जकड़न और सूजन बढ़ जाती है।

गर्म तेल से अध्यंग (मालिश)

तेल का तेल, सरसों का तेल या आयुर्वेदिक तेल (महा नारायण तेल, धन्वंतरि तेल) से नियमित मालिश करने से जोड़ों में राहत मिलती है।

हल्दी और मेथी

हल्दी और मेथी में सूजनरोधी गुण होते हैं। सुबह खाली पेट मेथी दाना पानी में भिंगोकर खाना लाभकारी है।

नियमित व्यायाम

हल्का योग, सूर्य नमस्कार और प्राणायाम रक्त संचार को बढ़ाते हैं और जकड़न कम करते हैं।

5. त्वचा की समस्याओं से बचाव

सर्दियों में त्वचा रुखी हो जाती है और हाथ-पैर फटने लगते हैं। आयुर्वेद त्वचा को भीतर से पोषण देने पर जोर देता है।

घी का सेवन

प्रतिदिन एक चम्चम घी खाने से त्वचा को प्राकृतिक नमी मिलती है।

नारियल या तिल के तेल से मालिश

स्नान से पहले तेल की मालिश त्वचा को रुखापन से बचाती है और शरीर को गर्म रखती है।

मजबूत

रहत रहता है।

गिलोय

गिलोय काढ़ा या गिलोय रस शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है और सर्दी-बुखार से बचाता है।

6. पाचन संबंधी समस्याओं से बचाव

ठंड के मौसम में भूख अधिक लगती है, लेकिन अनियमित खानपान पाचन को बिगाड़ देता है।

अदरक और नींबू

खाने से पहले अदरक पर थोड़ा-सा नमक और नींबू लगाकर खाना पाचन को सक्रिय करता है।

हरी सब्जियाँ और गर्म भोजन

सदियों में सलाद की जगह गर्म सब्जियाँ, दालें और सूप ज्यादा लाभदायक होते हैं।

चाय-कॉफी कम करें

कड़ाके की ठंड में लोग गर्म पेय पीते रहते हैं, लेकिन अत्यधिक चाय और कॉफी पाचन को कमजोर करती है और डिहाइड्रेशन बढ़ाती है।

7. सर्दियों में रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने के आयुर्वेदिक उपाय

च्यवनप्राश

च्यवनप्राश प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का सबसे प्रभावी आयुर्वेदिक उपाय है। इसे सुबह गुनगुने दूध के साथ लेना उत्तम है।

अमला

अमला विटामिन सी का सबसे अच्छा प्राकृतिक स्रोत है। इसका रस, मुरब्बा या पाउडर प्रतिदिन लेने से शरीर

समय से सोना और उठना

आयुर्वेद के अनुसार सर्दियों में रात को जल्दी सोना और सुबह सूर्योदय के बाद उठना शरीर को गर्म रखने में मदद करता है।

पर्याप्त धूप

धूप लेने से विटामिन डी मिलता है और शरीर की ऊर्जा बढ़ती है। प्रतिदिन 10–15 मिनट धूप में बैठना लाभकारी है।

पर्याप्त पानी

ठंड में लोग पानी कम पीते हैं, इससे पाचन और त्वचा खराब होती है। हल्का गुनगुना पानी पीना अच्छा होता है।

सर्दी में आयुर्वेद का महत्व

आयुर्वेद केवल उपचार नहीं, बल्कि संतुलित जीवन का मार्ग है। ठंड के मौसम में शरीर की प्राकृतिक गर्माहट को बनाए रखने, प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और बीमारियों से बचने के लिए आयुर्वेदिक उपाय अत्यंत प्रभावी हैं।

अदरक, तुलसी, हल्दी, घी, गिलोय, च्यवनप्राश, गर्म तेल की मालिश और संतुलित भोजन से न केवल सर्दियों की सामान्य बीमारियाँ दूर रहती हैं, बल्कि शरीर और मन दोनों अधिक मजबूत होते हैं।

योगिराज गम्भीरनाथ जी: शान्ति और सिद्धि के दिव्य समुद्र

परिचय: योग परम्परा का अमर ज्योति

हिमालय की गोद में जन्मे योगिराज गम्भीरनाथ की नाथयोग की उस पवित्र धारा के साकार रूप थे, जो सदियों से आत्मा को ब्रह्म से जोड़ती चली आ रही है। वे हठयोग, राजयोग और लययोग के क्षेत्र में आत्मसिद्धि के परम उदाहरण थे। नाथयोग परम्परा में आठ सौ वर्षों के लम्बे कालखण्ड में ऐसा कोई योगी न दिखा था, जो उनकी गहनता और शान्ति का ऐसा जीवन्त प्रतिविम्ब हो। वे पतञ्जलि और गोरखनाथ के समन्वय संस्करण के समान थे, जहां ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ उनके चरणचिन्तन को सौभाग्य सिन्दूर की तरह लगती थीं। शान्ति और गम्भीरता के उज्ज्वलतम रूप में वे खड़े थे, जैसे कोई शाश्वत पहाड़, जिसकी चोटी पर दिव्य प्रकाश हमेशा झिलमिलाता रहता है। बड़े-बड़े संत और महात्मा उनके चरणों में अपनी श्रद्धा समर्पित कर आत्मोक्ष का विधान प्राप्त करते थे। हिमालय से कन्याकुमारी तक के विशाल भूमि-भाग में बीसवीं शताब्दी में इतना बड़ा योगी दुर्लभ ही था। उन्होंने मानवता को योग शक्ति से सम्पन्न किया, योग-ब्रह्म-शिव का आत्मसाक्षात्कार लाभ दिया। भारत के प्रायः सभी तीर्थों को अपनी चरण-रज से उन्होंने पवित्रता प्रदान की, उनकी महिमा में वृद्धि की।

उस काल में जब भारत विदेशी शक्ति की अधीनता में था, उनके लिए भौतिक जगत की पराधीनता का कोई महत्व न था। वे जागतिक प्रपंच से अतीत थे, रहस्यपूर्ण ढंग से आध्यात्मिक क्रांति का सृजन कर रहे थे। उनके योग-उदय काल में विदेशी शासन को निकाल बाहर करने के लिए बंगाल तथा अन्य प्रान्तों में सशस्त्र राजक्रांति की योजनाएं कार्यरूप में परिणत हो रही थीं। महात्मा गम्भीरनाथ ने राजनीतिक क्रांतिकारियों की आध्यात्मिक पिपासा की तृप्ति की। अगणित वीर युवकों ने उनके पथ-प्रदर्शन में गम्भीर, अखंड और शाश्वत स्वतंत्रता ज्योति तथा आत्मशान्ति का दर्शन किया। उनकी उपस्थिति में ही वह दिव्य ऊर्जा थी, जो बाहरी बंधनों से उपर उठाकर आत्मा को मुक्त करती। वे योग के माध्यम से सत्य की उस गहराई में उत्तरते थे, जहां सारा ब्रह्मांड एक लीला मात्र लगता। उनकी शान्त मुद्रा में ही वह शक्ति छिपी थी, जो हृदयों को स्पर्श कर देती, और आत्मा को जागृत कर देती।

प्रारम्भिक जीवन: विरक्ति की प्रेरणा

महात्मा गम्भीरनाथ के पूर्वश्रम के संबंध में कुछ निश्चित रूप से कहना आसान न था। उनका जन्म विक्रम संवत् 19वीं शताब्दी के चौथे चरण में कश्मीर राज्य के एक गांव में समृद्ध परिवार में हुआ। शिक्षा-दीक्षा साधारण ढंग की थी। बचपन से ही उनके जीवन में योगाभ्यास के ताप्रारज्य में प्रवेश करने के पहले विषय-सुख की सुविधा उपलब्ध थी, पर उनका ध्यान उसकी ओर तनिक भी न था। पूर्वश्रम के संदर्भ में पूछने पर वे कहा करते थे कि परंपरा से क्या होगा। सांसारिक पदार्थों में तनिक भी आसक्ति न थी। धन-परिवार आदि से वे स्वाभाविक रूप से विरक्त थे। वह विरक्ति ऐसी थी, जैसे कोई नदी अपनी धारा में बहती हुई समुद्र की ओर अडिग रहती, बिना किसी द्वीप पर ठहरे।

युवावस्था में प्रवेश करते हुए उन्हें सूचना मिली कि गांव में एक योगी का आगमन हुआ है। योगी ने शमशान में अपना निवास चुना था। वे योगी से शमशान में मिलने गए। उन्होंने बड़ी श्रद्धा से कहा कि महाराज, घर पर मेरा मन नहीं लगता। संसार के विषय-भोग मुझे काट खाते हैं। मैं योगाभ्यास करना चाहता हूं। योगी नाथ-सम्प्रदाय



के थे। उन्होंने गम्भीरनाथ से कहा, तुम गोरखपुर जाकर गोरखनाथ मठ के महंत योगी बाबा गोपालनाथ जी महाराज से योग-दीक्षा लो। मैं तुम्हारी महत्वाकांक्षा से बहुत प्रसन्न हूं। तुम उच्च कोटि के योगी होगे।

गम्भीरनाथ योगी के आदेश से गोरखपुर के लिए चल पड़े। वे गोरखनाथ मठ में आए। लोग उन्हें देखकर आश्चर्यचिकित हो गए। उनके पास पर्याप्त रूपये थे, उन्होंने अच्छे से अच्छा रेशमी कपड़ा पहन रखा था। वे देखने में बड़े सौम्य और सुंदर थे। महंत गोपालनाथ से मिलने पर उनके चरणों में उन्होंने आत्मर्पण कर दिया। गोपालनाथ महाराज ने नाथ सम्प्रदाय के योगमार्ग में दीक्षित कर लिया। राजकीय वेश का परित्याग कर गम्भीरनाथ ने कौपीन धारण कर योगसाधना के निष्कंटक राज्य में प्रवेश किया। गोपालनाथ जी महाराज ने उनकी शांत मुद्रा से प्रसन्न होकर 'गम्भीरनाथ' नाम प्रदान किया। निःसंदेह वे गम्भीरता के परम दिव्य सजीव समुद्र ही थे। बाबा गोपालनाथ की महत्वी कृपा-दृष्टि पाकर मठ में निवास कर योगाभ्यास करने लगे। उनकी गुरुभक्ति उच्च कोटि की थी। वे गुरु की प्रत्येक आज्ञा का पालन करते थे। उन्होंने बड़ी तत्परता और तप से अपने आध्यात्मिक उत्तरदायित्व का निर्वाह किया। वे मौन रहते थे, सत्यचिंतन और मठ के आवश्यक आवश्यक कार्यों के समीचीन सम्पादन में लगे रहते थे। बाबा गोपालनाथ ने धीरे-धीरे उन्हें मठ के उपास्य की पूजा-अर्चना में नियुक्त करना आरम्भ किया। गम्भीरनाथ की उपस्थिति से गोरखनाथ मठ में शान्ति साकार हो उठी। उन्हें गुरु ने प्रसन्न होकर पुजारी का कार्य-भार सौंपा। इस प्रकार गम्भीरनाथ के तपोमय साधना-जीवन में कर्मयोग-भक्तियोग के उदय ने ज्ञानयोग-परम अंतरस्थ ज्योति के दर्शन का पथ प्रशस्त कर दिया। बाबा गोपालनाथ की प्रसन्नता और कृपा से अभिभूत गम्भीरनाथ की प्रारम्भिक योग-साधना पर देवीपाटन के योगी शिवनाथ का भी अमित प्रभाव था। वह प्रभाव ऐसा था, जैसे कोई नदी अपनी सहायक धारा से और भी गहरी हो जाती।

महात्मा गम्भीरनाथ ने सिद्धयोगपीठ गोरखनाथ की तपोभूमि गोरखपुर को अपनी तपस्या से अक्षय समृद्धि प्रदान की। वे निरंतर योगस्थ थे। वे श्रीगीता की भगवत्-घोषणा पर अटल विश्वास रखते थे:

"योगिनामपि सर्वेषां मद्गतेनान्तरात्मना।"

श्रद्धावान् भजते यो मां स मे युक्ततमो मतः ॥"

यह घोषणा उनके हृदय में बसी थी, जैसे कोई शाश्वत मंत्र। वे अंतःकरण में स्वस्थ थे। वे अपने समय के सर्वश्रेष्ठ योगी थे, धर्मतत्व के मर्मज्ञ और असावधान आत्मज्ञ। उनके समकालीन महात्मा विजय कृष्ण गोस्वामी की मान्यता थी कि हिमालय के देश में-भारत देश में उनका ऐसा योगी कोई दूसरा नहीं है। विजय कृष्ण उनकी

परम योगविभूति से बहुत प्रभावित थे। महात्मा गम्भीरनाथ की योग साधना शैव दर्शन के सिद्धांत की प्रतीक थी। वे शैव योगी होते हुए भी शुद्ध सच्चिदानन्द तत्व के निरपेक्ष और निष्पक्ष द्रष्टा थे। उनका योग गोरखनाथ की योग-पद्धति का अनुगामी था। महात्मा गम्भीरनाथ ने गोरख की योग साधना पद्धति का बीसवीं शताब्दी में पूर्ण प्रतिनिधित्व किया। जीवनभर अपने साम्रादायिक नाथयोग परम्परागत सिद्धांत पर अडिग रहकर आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। योग और ज्ञान का समन्वय किया।

योग साधना का प्रारम्भ: काशी से प्रयाग तक

गम्भीरनाथ ने योग-साधना के लिए काशी की पैदल यात्रा की। वे वनमार्ग से बिना भूख-प्यास की चिंता किए चले जा रहे थे। उनका प्रभु की कृपा पर दृढ़ विश्वास था। तीसरे दिन वे भूख से नितां परिश्रांत हो गए, पर शेष शारीरिक गति पर निर्भर होकर वे पुनीत महातीर्थी की ओर बढ़ते जा रहे थे। रास्ते में उनकी एक परिचित ब्राह्मण से भेट हुई। वह उन्हें देखते ही सारी स्थिति समझ गया। निकटस्थ गांव से दूध-चूरा लाकर भोजन करने का आग्रह किया। वह जानता था कि गम्भीरनाथ ने भोजन के संदर्भ में रास्ते में किसी से कुछ बातचीत न की होगी। गम्भीरनाथ ने भगवत्कृपा समझकर भोजन कर लिया। काशी पहुंचने पर उन्होंने कुछ दिनों तक गंगा के एक निर्जन तटीय स्थान में रहकर योगाभ्यास आरम्भ किया। वे नित्य गंगा में स्नान कर भगवान विश्वनाथ का दर्शन करने जाया करते थे। भीड़ से बहुत दूर रहते थे, इसलिए विक्षियां मांगने नहीं जाते थे। उनकी त्यागमयी वृत्ति ने साधकों और जिज्ञासुओं को आकर्षित किया। योगी गम्भीरनाथ ने जन-सम्पर्क को साधना का बहुत बड़ा विष्णु समझा। उन्होंने काशी छोड़ दिया। वे प्रयाग आ गए। प्रयाग में गंगा-यमुना के पुनीत संगम की दिव्यता से सम्प्लावित झूसी तट की एक गुफा में रहकर वे तप करने लगे। दैवयोग से मुकुटनाथ नाम के एक नाथयोगी ने उनके भोजन तथा सेवा आदि की व्यवस्था की। बाबा गम्भीरनाथ अनवरत रात-दिन उस गुफा में योगाभ्यास करने लगे। इस प्रकार वे प्रयाग में तीन साल तक रहे। उनका आध्यात्मिक स्तर उच्च तत्त्व पर पहुंच गया। उन्होंने महती योग शक्ति प्राप्त की। वह शक्ति ऐसी थी, जो आत्मा को स्पर्श कर देती, और सारा ब्रह्मांड एक सूक्ष्म लीला लगने लगता।

अमरनाथ, द्वारका, गंगासागर तथा रामेश्वर आदि तीर्थों को अपनी उपस्थिति से पावन किया। उन्होंने भगवती नर्मदा की परिक्रमा चार साल में पूरी की और अमरकंटक पर अधिक समय तक रहे। नर्मदा परिक्रमा के समय उनके जीवन में एक विलक्षण घटना घटी, जो उनकी अपार योगशक्ति और महती तपस्या की परिचयक है। गम्भीरनाथ ने नर्मदा की परिक्रमा कर रहे थे। एक तटीय रम्य स्थान में उनका मन लग गया। वहां एक कुटी थी। गम्भीरनाथ ने उसी कुटी में निवास किया। पहले दिन उन्हें एक बहुत बड़ा सर्प दिख पड़ा। वह उनका दर्शन कर अदृश्य हो गया। दूसरे और तीसरे दिन भी प्रभात काल में गम्भीरनाथ ने उसको देखा। उन्होंने इस ओर कुछ भी न कहा। वे अपने गम्भीर चिंतन में तल्लीन थे। तीसरे दिन कुटी में रहने वाला एक ब्रह्मचारी, जो कुछ दिनों के लिए बाहर था, आ गया। वह उस कुटी में बारह साल से निवास करता था। गम्भीरनाथ के आगमन से वह बहुत प्रसन्न हुआ। उसने अपनी आपबीती सुनाई कि मैं इस कुटी में बारह साल से रहता हूं। इसी के निकट एक बहुत बड़े महात्मा सर्प के वेश में रहते हैं। उन्हीं के दर्शन के लिए मैं ठहरा हूं। महात्मा गम्भीरनाथ ने सर्प-दर्शन की बात कही। ब्रह्मचारी आश्चर्यचिकत हो गया। उसने कहा कि महाराज, आपका तपोबल स्तुत्य है। जिस कार्य को मैं बारह साल में भी न कर सका, वह बिना किसी प्रयास के आपने कर दिखाया। आप धन्य हैं कि सर्प-वेश में रहने वाले महात्मा ने तीनों दिन आप पर कृपादृष्टि की। गम्भीरनाथ ने नर्मदा परिक्रमा समाप्त की। यह घटना उनकी तपस्या की उस गहराई को दर्श

इस्लाम में हराम आत्महत्या, फिर सुसाइड बॉम्बर्स का मुरिलम चेहरा क्यों?

इस्लाम धर्म में आत्महत्या को सख्ती से हराम माना जाता है। कुरान और हदीस में साफ़ कहा गया है कि जिंदगी अल्लाह की अमानत है, इसे खुद खत्म करना बड़ा गुनाह है। फिर भी, दुनिया भर में सुसाइड बॉम्बिंग के ज्यादातर मामले मुस्लिम चेरों से जुड़े दिखते हैं। यह एक ऐसा विरोधाभास है जो सोचने पर मजबूर करता है। अखिर क्यों ऐसा हो रहा है? क्या यह धर्म की वजह से है या कुछ और? इस सवाल का जवाब इतिहास, राजनीति और सामाजिक हालात में छिपा है। हम इस लेख में तथ्यों पर आधारित जानकारी देंगे, ताकि पाठक खुद समझ सकें कि यह समस्या कितनी जटिल है। सुसाइड बॉम्बिंग कोई नई चीज़ नहीं है, लेकिन 1980 के दशक से इसका इस्तेमाल आतंकवादी गुटों ने बढ़ा दिया। आंकड़ों के मुताबिक, 1981 से 2007 तक के 1270 हमलों में से ज्यादातर इस्लामी चरमपंथी संगठनों ने किए। लेकिन यद रखें, यह पूरे मुस्लिम समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करता। अरबों मुसलमान शांति से जीते हैं और ऐसे हमलों की निंदा करते हैं। समस्या की जड़ में राजनीतिक संघर्ष, विदेशी हस्तक्षेप और गलत विचारधाराएं हैं। उदाहरण के लिए, फिलिस्तीन-इजरायल विवाद या इराक-अफगानिस्तान की जंग ने कई युवाओं को भटकाया। चरमपंथी नेता इन हालात का फायदा उठाते हैं और कुरान की कुछ आयतों को तोड़-मोरोड़कर पेश करते हैं। वे कहते हैं कि यह शहादत है, न कि आत्महत्या। लेकिन मुख्यधारा के उल्मा इसकी साफ़ निंदा करते हैं। यह लेख चार हिस्सों में इसकी शुरुआत, वजहों और संतुलित नजरिए को समझाएगा। हमारा मकसद डर फैलाना नहीं, बल्कि समझ बढ़ाना है, ताकि ऐसी हिस्सा रुके।

इस्लाम की नजर में आत्महत्या: क्यों है यह सख्त हराम?

इस्लाम में आत्महत्या को सबसे बड़े पापों में गिना जाता है, क्योंकि यह अल्लाह की दी हुई जिंदगी को उत्करना है। कुरान की सूरह अन-निसा में कहा गया है कि जो खुद को मार ले, वह आग में हमेशा जलता रहेगा। पैरांबर मुहम्मद साहब ने भी हदीस में साफ़ फरमाया कि ऐसा करने वाले की नमाज न पढ़ी जाए। यह नियम इतना सख्त है कि मुस्लिम समाज में सुसाइड रेट बहुत कम है, खासकर पारंपरिक इलाकों में। लेकिन फिर सुसाइड बॉम्बिंग क्यों? यहां फक्त समझना जरूरी है। मुख्यधारा का इस्लाम इसे आत्महत्या ही मानता है, लेकिन कुछ चरमपंथी इसे जिहाद का हिस्सा बताते हैं। वे तर्क देते हैं कि हमलावर दुश्मन को मारने के लिए खुद को कुर्बान कर रहा है, इसलिए यह शहादत है। लेकिन ज्यादातर विद्वान इसकी निंदा करते हैं। उदाहरण के लिए, सऊदी अरब के ग्रैंड मुफ्ती ने कहा कि यह कुरान के खिलाफ है। आंकड़ों से भी साफ़ है कि मुस्लिम देशों में सामान्य सुसाइड कम है, लेकिन युद्धग्रस्त इलाकों में चरमपंथ बढ़ा है। यह विरोधाभास इसलिए है क्योंकि चरमपंथी युवाओं को ब्रेनवॉश करते हैं। वे कहते हैं कि जन्मत मिलेगी, लेकिन हकीकत में यह राजनीतिक हथियार है। वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि सुसाइड बॉम्बर्स में



मानसिक बीमारी कम होती है, वे ज्यादातर सामान्य लोग होते हैं जिन्हें हालात ने तोड़ा। इस्लाम शांति का धर्म है, जो जंग में भी निर्दोषों की हत्या निषेध करता है। इसलिए, इस हराम को जायज ठहराना गलत व्याख्या है। समाज को चाहिए कि युवाओं को सही शिक्षा दे, ताकि वे भर्तके नहीं। यह समस्या सिर्फ़ मुसलमानों की नहीं, बल्कि पूरी दुनिया की है, जहां हिंसा का चक्र चल रहा है।

सुसाइड बॉम्बिंग की जड़: लेबनान से क्यों फैला यह जहर?

सुसाइड बॉम्बिंग की आधुनिक शुरुआत 1980 के दशक में हुई, जब लेबनान में ईरान समर्थित हिजबुल्लाह ने इसका इस्तेमाल किया। 1983 में बेरूत के अमेरिकी दूतावास पर हमला हुआ, जिसमें 63 लोग मारे गए। यह पहला बड़ा मामला था, जहां हमलावर ने खुद को बम से उड़ा दिया। इससे पहले, जापान के कमिकाजे पायलट या तमिल टाइगर्स ने ऐसा किया, लेकिन इस्लामी संदर्भ में यह नया था। हिजबुल्लाह ने इसे इजरायली कब्जे के खिलाफ हथियार बनाया। फिर 1990 के दशक में फिलिस्तीन में हमास ने अपनाया। 1994 में अफुला बस हमले से शुरू होकर, यह इजरायल के खिलाफ सिलसिला बन गया। अल कायदा ने इसे वैश्विक बना दिया। 2001 के 9/11 हमलों में चार विमान इस्तेमाल हुए, जो सुसाइड स्टाइल थे। आंकड़ों के मुताबिक, 1981 से 2019 तक 6000 से ज्यादा सुसाइड हमले हुए, जिनमें 70% इस्लामी चरमपंथी गुटों से जुड़े। औसामा बिन लादेन ने इसे फैलाया, कहकर कि यह कमजोर मुसलमानों का मजबूत हथियार है। लेकिन शुरुआत राजनीतिक थी, न कि धार्मिक। लेबनान में सिविल वॉर और विदेशी सेनाओं ने गुस्से भड़काया। ईरान ने शिया विचारधारा से प्रेरित होकर फतवे जारी किए। धीरे-धीरे यह सुन्नी गुटों तक पहुंचा। आईएसआईएस ने तो इसे रोजमरा का बना दिया, इराक-सिरीया में सैकड़ों हमले करवाए। लेकिन यद रखें, यह फैलाव युद्धों की वजह से हुआ। अमेरिकी हमले, इजरायली नीतियां और तानाशाही

ने युवाओं को बर्बाद किया। चरमपंथी संगठनों ने सोशल मीडिया से भर्ती शुरू की, वीडियो दिखाकर शहादत का सपना बेचा। आज अफ्रीका से एशिया तक यह फैला है, लेकिन ज्यादातर प्रभावित इलाके मुस्लिम बहुल हैं, इसलिए चेरो मुस्लिम लगता है। हकीकत में, यह वैश्विक राजनीति का नतीजा है, जो निर्दोषों को मार रही है।

आंकड़ों का आईना: ज्यादातर सुसाइड बॉम्बर्स मुरिलम हीं क्यों?

दुनिया भर के आंकड़े दिखाते हैं कि 2000 के बाद से सुसाइड हमलों का 50% से ज्यादा हिस्सा इस्लामी चरमपंथी संगठनों से जुड़ा है। शिकागो प्रोजेक्ट ऑन सिक्योरिटी एंड थ्रेट्स के अनुसार, 1982 से 2020 तक 6500 हमलों में 90% मुस्लिम हमलावर थे। लेकिन यह आंकड़ा भ्रामक हो सकता है, क्योंकि ज्यादातर हमले मिडिल ईस्ट, दक्षिण एशिया और अफ्रीका में होते हैं, जहां मुस्लिम आबादी ज्यादा है। उदाहरण के लिए, हमास, हिजबुल्लाह, तालिबान और आईएस ने हजारों हमले किए। प्यूरिसर्च के सर्वे में पाया गया कि कुछ मुस्लिम देशों में 10-20% लोग इसे कभी-कभी जायज मानते हैं, लेकिन ज्यादातर निंदा करते हैं। अमेरिका में 1994-2020 तक 893 आतंकी घटनाओं में राइट-विंग हमले ज्यादा थे, लेकिन सुसाइड स्टाइल कम। सुसाइड बॉम्बिंग की खासियत यह है कि यह सस्ता और धातक है – एक हमला औसतन 12 लोगों को मारता है। लेकिन क्यों मुस्लिम? क्योंकि चरमपंथी गुट यहां सक्रिय हैं। तमिल टाइगर्स ने 1987-2009 तक 378 सुसाइड हमले किए, जो हिंदू थे, लेकिन वैश्विक मीडिया में कम चर्चा हुई। इसी तरह, PKK ने कुर्द हमले किए। लेकिन इस्लामी हमले ज्यादा कवरेज पाते हैं। अध्ययन बताते हैं कि हमलावर ज्यादातर 18-25 साल के युवा होते हैं, शिक्षित लेकिन बेरोजगार। वे गरीबी, भेदभाव और युद्ध से तंग आकर भर्ती होते हैं। रैंड कॉर्पोरेशन की रिपोर्ट कहती है कि यह रणनीतिक है – कम संसाधनों से ज्यादा नुकसान। लेकिन

कुल मिलाकर, मुस्लिम आबादी का 0.001% भी ऐसा नहीं करता। यह अल्पसंख्यक चरमपंथ का कारनामा है, जो पूरे धर्म को बदनाम करता है। संतुलित नजरिया यही है कि आंकड़े संदर्भ के बिना गुमराह करते हैं।

वजहों की परतें: राजनीति से विचारधारा तक की उलझन

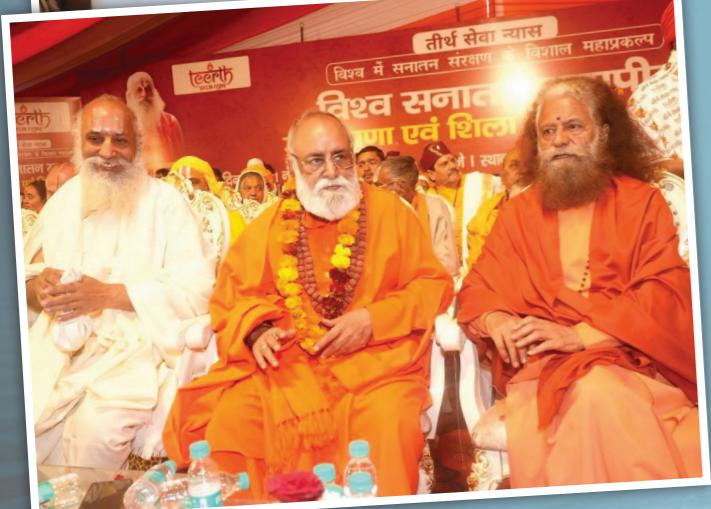
सुसाइड बॉम्बिंग के पीछे कई वजहें हैं, जो धर्म से ज्यादा राजनीति और सामाजिक दबाव से जुड़ी हैं। सबसे बड़ी वजह कब्जा और अन्याय का एहसास है। फिलिस्तीन, कश्मीर या अफगानिस्तान जैसे इलाकों में युवा विदेशी ताकतों से लड़ने को तैयार हो जाते हैं। चरमपंथी नेता इसे शहादत बता कर भर्ती करते हैं, कुरान की जिहाद वाली आयतों को तोड़ते हैं। लेकिन असल में, यह सामरिक हथियार है – बिना भागने के मौका। अध्ययन दिखाते हैं कि हमलावरों में डिप्रेशन कम होता है, वे मोटिवेटेड होते हैं। गरीबी, बेरोजगारी और शिक्षा की कमी भी बड़ी वजह है। आईएस ने इराक में युवाओं को पैसे देकर भर्ती किया। विचारधारात्मक रूप से, सलाफी जिहाद ने इसे फैलाया, कहकर कि मरने से जन्मत मिलेगी। लेकिन मुख्यधारा के मुसलमान इसे हराम मानते हैं। ब्रुकिंग्स इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट कहती है कि कुछ फतवे इसे जायज ठहराते हैं, लेकिन ज्यादातर उलेमा विरोधी हैं। सामाजिक दबाव भी है – परिवार का समान, संगठन का प्रेशर। महिलाएं भी शमिल होती हैं, जैसे चेचन्या में। वैश्विक स्तर पर, पश्चिमी नीतियां – जैसे इराक पर हमला – ने गुस्सा बढ़ाया। यह चक्र है: हमला, बदला, ज्यादा हमला। लेकिन समाधान शिक्षा और संवाद में है। अगर मुस्लिम युवाओं को मौके मिलें, तो चरमपंथ कम होगा। संतुलित नजरिया यही है कि यह इस्लाम की कमजोरी नहीं, बल्कि मानवीय कमजोरी है। दुनिया को चाहिए कि जड़े समझे, न कि सिर्फ़ लक्षण।

शांति की पुकार: मुख्यधारा का विरोध और आगे का रास्ता

मुख्यधारा का इस्लाम सुसाइड बॉम्बिंग की सख्त मुखलिफ़त करता है। हजारों मुस्लिम विद्वान, संगठन और सरकारों इसे आतंक बताती हैं। प्यूरिसर्च में 80% से ज्यादा मुसलमान इसे कभी जायज नहीं मानते। भारत के असदुद्दीन औवैसी जैसे नेता ने हाल ही में कहा कि यह हराम है, शहादत नहीं। दुनिया भर में फतवे जारी हुए हैं – सऊदी, मिस्र से। लेकिन चरमपंथी अल्पसंख्यक हैं, जो सोशल मीडिया से प्रचार करते हैं। आगे का रास्ता संवाद, विकास और न्याय में है। अगर राजनीतिक विवाद सुलझें, तो युवा भटकेंगे नहीं। शिक्षा में सही इस्लाम सिखाना जरूरी है, जो शांति पर जारी रहे। वैश्विक स्तर पर, मीडिया को संतुलित कवरेज देना चाहिए, ताकि स्ट्रियोटाइप न बने। मुस्लिम समाज खुद को साफ़ करने की कोशिश कर रहा है – जैसे पाकिस्तान में एंटी-टेरर लॉ। लेकिन यह लंबी जग है। अंत में, यद रखें: हिंसा कभी समाधान नहीं। इस्लाम का मूल संदेश अमन है, और यही रास्ता हमें ले जाएगा।

ऐतिहासिक शिला पूजन में संतों की विराट उपस्थिति जगद्गुरु की वाणी बनी केंद्र बिंदु

जगद्गुरु कुमार स्वामी जी ने कहा: सनातन मार्ग ही सुख का मूल



विश्व सनातन महापीठ की उद्घोषणा और शिला पूजन का भव्य आयोजन अनेक आध्यात्मिक संगों, विद्वानों और साधकों की उपस्थिति में संपन्न हुआ। इस कार्यक्रम का मुख्य केंद्र अन्त श्री विभूषित जगद्गुरु महा ब्रह्मर्षि श्री कुमार स्वामी जी रहे, जो अनेक विशिष्ट संतों के साथ इस ऐतिहासिक क्षण के साक्षी बने।

समारोह के दौरान मीडिया को संबोधित करते हुए जगद्गुरु कुमार स्वामी जी ने सनातन धर्म के मार्ग की अनिवार्यता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि मनुष्य के जीवन में सुख, शांति और स्थिरता तभी संभव है जब वह सनातन धर्म की मूल शिक्षाओं का वालन करे। उन्होंने इसे उतना ही आवश्यक बताया जितना जीवित रहने के लिए हवा का होना जगद्गुरु ने हठयोगी जी द्वारा आयोजित इस समग्र कार्यक्रम की सराहना की और कहा कि इनमें महान संतों का एक साथ आगमन विश्व स्तर पर पहली बार देखने को मिल रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन समाज को दिशा देने वाले होते हैं और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बनते हैं।

नरेंद्र मोदी के कार्यों की प्रशंसा

देश की राजनीति और राष्ट्रीय विकास पर वोलते हुए जगद्गुरु ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यों की प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि 1947 के बाद देश को ऐसा व्यवितरण नहीं मिला जिसने इतने व्यापक और निणायक कार्य किए हैं। जगद्गुरु कुमार स्वामी जी ने कहा कि दृढ़ संकल्प और सही दिशा से देश तेजी से बदल सकता है और प्रधानमंत्री ने इसे सिद्ध किया है। उन्होंने लोगों से आह्वान किया कि राष्ट्रीय में चल रहे सकारात्मक प्रयासों को समर्थन देना आवश्यक है।

समारोह में अनेक प्रमुख संतों की उपस्थिति

कार्यक्रम की भव्यता को और बढ़ाने के लिए देश के विभिन्न पीठों और संस्थानों के प्रमुख संत उपस्थित रहे। इनमें विश्व सनातन महावीर के प्रमुख हठयोगी जी महाराज, परमार्थ निकेतन के परमार्थक विदानंद मुनि जी महाराज, पच श्री ब्रह्मेश्वरानंद जी महाराज, नाभा पीठ सुदामा कुटी के श्री महंत सुनीक्षण दास जी महाराज, करौली शक्ति महादेव जी, देवकीनंदन ठाकुर जी और स्वामी अनिरुद्धचार्य जी महाराज सहित कई प्रतिष्ठित संत शामिल थे। सभी संतों ने विश्व सनातन महापीठ की स्थापना को एक ऐतिहासिक कदम बताया और कहा कि यह सनातन संस्कृति की रक्षा, पुनरुद्धार और वैश्वक प्रसार की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सनातन संस्कृति के संरक्षण और मार्गदर्शन का संकल्प

पूरे कार्यक्रम का उद्देश्य सनातन धर्म की मूल भावना को संरक्षित रखना, समाज में आध्यात्मिक जागरूकता बढ़ाना और धर्म के वैश्वक संदेश को मजबूत करना रहा। जगद्गुरु कुमार स्वामी जी सहित अन्य संतों ने कहा कि जब समाज का मार्गदर्शन आध्यात्मिकता और संस्कारों के आधार पर होता है, तब राष्ट्र मजबूत बनता है।

जगद्गुरु महाब्रह्मऋषि कुमार स्वामी जी ने परिवार संग की गंगा आरती संगत ने महसूस किए दिव्य क्षण

हरिद्वार के पावन गंगा तट पर बुधवार की शाम अध्यात्म और धूम पूर्ण परिवर्ष होते हैं। जगद्गुरु ब्रह्मऋषि श्री कुमार स्वामी जी अपने परिवार सहित गंगा आरती में पथारे। उनके आगमन से घट का वातावरण और अधिक प्रकाशमपूर्ण हो उठा। आरती के दौरान भजन, धोे और शंखनाद की ध्वनि से सम्पूर्ण परिसर एक आध्यात्मिक अनुभूति से भर गया। जगद्गुरु जी के साथ उपस्थित संगत ने भी इस पावन बेता का दिव्य तुरंत उठाया। लोग श्रद्धा और उत्साह के साथ गंगा के तट पर एकत्र हुए और धूम, धीप तथा मंजोच्चा के बीच आरती का हिस्सा बने। आरती के दौरान वातावरण में गंगा की शीतल लहरों के साथ भवित की समग्र अनुभूति फैलती रही।

गंगा आरती के उत्तरांत संगत ने जगद्गुरु जी का दर्शन किया और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। कई श्रद्धालुओं ने कहा कि उनके आगमन ने साधारण आरती को एक अद्भुत आध्यात्मिक अनुष्ठान में बदल दिया। जगद्गुरु कुमार स्वामी जी ने भी संगत को गंगा की पवित्रता, सनातन संस्कृति और सेवा की भावना पर प्रेरक संदेश दिया। उन्होंने कहा कि गंगा केवल एक नदी नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है।



संतोंने भाई श्री मनदीप नागपाल जी को किया स्मरण

कार्यक्रम के दौरान भाई श्री मनदीप नागपाल जी को विशेष रूप से याद किया गया। अनेक संतों ने उनके प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की और उन्हें धूमपूर्ण श्रद्धालुओं अंगित की। संतों ने कहा कि मनदीप नागपाल जी सदैव सेवा, समर्पण और विनम्रता के प्रतीक रहे। समाज और धर्म के लिए उनके योगदान को युगों तक स्मरण किया जाएगा। संगत और उपस्थित भक्तों ने भी अपनी भावनाएं प्रकट कीं। वातावरण में एक गहरी सेवादेवा और सम्मान का भाव था, जिसने मनदीप नागपाल जी के व्यक्तित्व और उनके जीवन के मूल्यों को और अधिक उजागर किया।



अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस 2025: क्यों मनाया जाता है 19 नवंबर को, और एक भारतीय महिला ने कैसे दी इसे नई पहचान

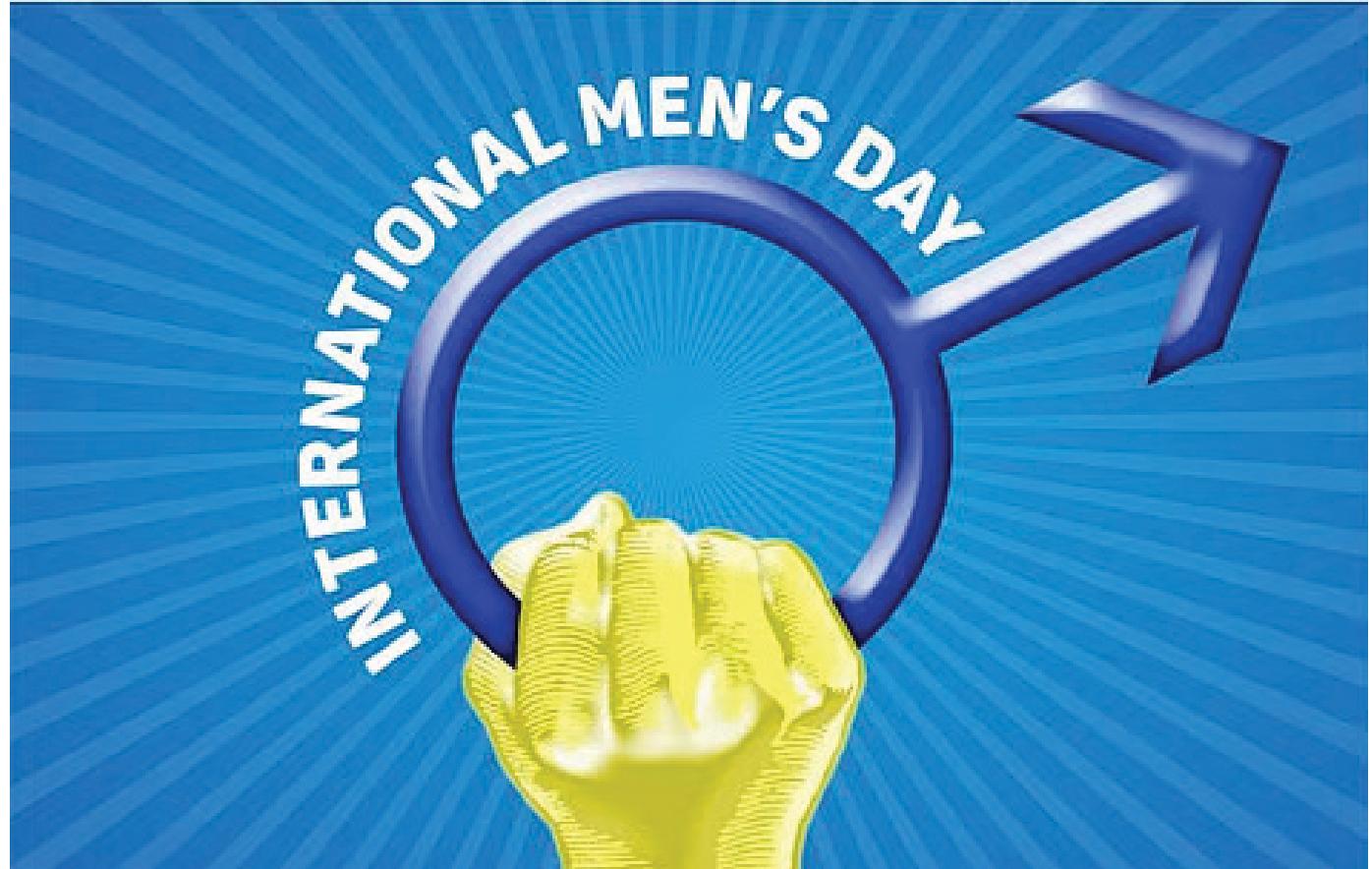
पुरुषों की सकारात्मक भूमिका: 2025 का थीम और महत्व

अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस हर साल 19 नवंबर को मनाया जाता है, और इस साल 2025 में इसका

थीम है 'पुरुषों और लड़कों का उत्सव'। यह दिन पुरुषों के समाज, परिवार और समुदाय में योगदान को सराहता है, साथ ही उनकी सेहत और खुशहाली पर ध्यान दिलाता है। दुनिया भर में करीब 80 देशों में यह दिन मनाया जाता है, लेकिन भारत में इसके आयोजन सबसे बड़े और जोशीले होते हैं। इस थीम के तहत पुरुषों को सकारात्मक रोल मॉडल के रूप में पेश किया जाता है, जैसे पिता, भाई या दोस्त जो दूसरों की मदद करते हैं। आज के दौर में जब मानसिक स्वास्थ्य की बातें आम हो रही हैं, यह दिन पुरुषों को अपनी भावनाओं व्यक्त करने का मौका देता है। पुरुष अक्सर अपनी कमजोरियां छिपाते हैं, लेकिन यह दिन बताता है कि मजबूत बनना मतलब दर्द सहना नहीं, बल्कि मदद मांगना भी है। 2025 में वैश्विक स्तर पर वेबकास्ट और सेमिनार हुए, जहां पुरुषों की प्रेरक कहानियां साझा की गईं। भारत में तो स्कूलों, कॉलेजों और ऑफिसों में वर्कशॉप चले, जहां युवाओं को सिखाया गया कि सच्ची मर्दानगी क्या होती है – जिम्मेदारी लेना और दूसरों का सम्मान करना। यह दिन सिर्फ जश्न नहीं, बल्कि सोचने का मौका भी है कि समाज में लिंग भेदभाव दोनों तरफ होता है। पुरुषों को भी कई चुनौतियां झेलनी पड़ती हैं, जैसे नौकरी का दबाव या परिवार की जिम्मेदारी। थीम के जरिए हम देखते हैं कि लड़कों को बचपन से ही सही मूल्य सिखाने चाहिए, ताकि वे बेहतर इंसान बनें। कुल मिलाकर, यह दिन हमें याद दिलाता है कि हर लिंग का सम्मान जरूरी है, और संतुलन से ही समाज मजबूत होता है।

जन्मदिन से शुरू हुई परंपरा: 19 नवंबर क्यों चुना गया?

अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस की शुरुआत 1999 में त्रिनिदाद और टोबैगो में हुई, जब डॉक्टर जेरोम टीलुकसिंघ ने इसे शुरू किया। वे एक इतिहास के लेक्चरर थे, और उन्होंने 19 नवंबर को ही यह दिन चुना क्योंकि यह उनके पिता का जन्मदिन था। उनका स्थान था कि पिता परिवार के लिए रोल मॉडल होते हैं, और उनका सम्मान करना चाहिए। साथ ही, 19 नवंबर 1989 को त्रिनिदाद के फुटबॉल टीम ने वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई किया था, जो देश को एक नुस्खा करने वाला पल था। उस जीत ने हिंदू, मुस्लिम, ईसाई सबको साथ लाया, और दिखाया कि पुरुषों की मेहनत कैसे समाज बदल सकती है। इससे पहले 1990 के दशक में अमेरिका और यूरोप में कुछ छोटे आयोजन हुए थे, लेकिन वे ज्यादा नहीं चले। डॉक्टर टीलुकसिंघ ने ऑस्ट्रेलिया के पुरुष अधिकार संगठनों की मदद से इसे वैश्विक बनाया। आज यह दिन 80 से ज्यादा देशों में मनाया जाता है, और हर साल एक नया थीम होता है। 2025 का थीम 'पुरुषों और लड़कों का उत्सव' इसी परंपरा को आगे बढ़ाता है। यह तारीख चुनने का फैसला सोचने लायक है – एक पिता के जन्मदिन से जुड़ी, जो बताता है कि पुरुष दिवस सिर्फ जश्न नहीं, बल्कि परिवार की अहमियत पर जोर देता है। समाज में अक्सर पुरुषों को मजबूत समझा जाता है, लेकिन यह दिन याद दिलाता है कि एक महिला ने पुरुषों के दिन को इतना मजबूत बनाया।



होती है। भारत जैसे देश में, जहां परिवार सब कुछ है, यह तारीख और भी खास लगती है। कुल मिलाकर, 19 नवंबर की पसंद हमें सोचने पर मजबूर करती है कि छोटे-छोटे पल कैसे बड़ी परंपराएं बना देते हैं।

भारतीय महिला की मेहनत: उमा चल्ला ने कैसे बदली तस्वीर

भारत में अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस को लोकप्रिय बनाने में एक महिला का बड़ा हाथ है – उमा चल्ला। वे बैंगलुरु की रहने वाली हैं, और साव इंडियन फैमिली फाउंडेशन की संस्थापक। 2005 के आसपास वे पुरुष अधिकारों के लिए सक्रिय हुईं, जब उनके भाई को दहेज उत्पीड़न का केस झेलना पड़ा। अमेरिका में पढ़ाई करने वाली उमा, जो बायोलॉजिस्ट हैं, ने वहां से प्रेरणा ली और भारत लौटकर पुरुषों के लिए आवाज उठाई। 2007 में उन्होंने अकेले ही भारत में पहला पुरुष दिवस मनाया, और उसके बाद यह परंपरा सालाना चल पड़ी। अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस की अधिकारिक वेबसाइट पर लिखा है कि उमा ने इसे वैश्विक स्तर पर फैलाने में बड़ी भूमिका निभाई। उन्होंने वॉरिक वारिक को प्रेरित किया, जो ऑस्ट्रेलिया के डैड्स फॉर किड्स के संस्थापक हैं, ताकि दुनिया भर में एक ही तारीख पर आयोजन हों। उमा की कोशिशों से भारत में यह दिन स्कूलों, कॉलेजों और समुदायों तक पहुंचा। वे कहती हैं कि समाज में पुरुषों के खिलाफ भी भेदभाव है, जैसे कानूनों में असंतुलन या मानसिक दबाव। उनकी मेहनत से आज भारत में सबसे बड़े आयोजन होते हैं – वर्कशॉप, सेमिनार और जागरूकता अभियान। यह सोचने लायक है कि एक महिला ने पुरुषों के दिन को इतना मजबूत बनाया।

उमा दो बच्चों की मां हैं, और उनका मानना है कि परिवार में संतुलन ही सच्ची ताकत है। उनकी कहानी बताती है कि बदलाव किसी एक समूह तक सीमित नहीं, बल्कि सबके हित में होता है। 2025 में भी उनके योगदान को याद किया गया, जब कई आयोजनों में उन्हें श्रद्धांजलि दी गई। कुल मिलाकर, उमा चल्ला की मेहनत हमें सिखाती है कि सच्ची एकजुटता लिंग से ऊपर होती है।

2025 के आयोजन: भारत में जोश और वैश्विक संदेश

2025 में अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस पर भारत में भव्य आयोजन हुए, जो थीम 'पुरुषों और लड़कों का उत्सव' पर केंद्रित थे। दिल्ली, मुंबई और बैंगलुरु जैसे शहरों में सेमिनार चले, जहां पुरुषों की मानसिक सेहत पर बात हुई। स्कूलों में बच्चों को सिखाया गया कि सकारात्मक मर्दानगी क्या है – मतलब दूसरों की मदद करना, न कि सिर्फ ताकत दिखाना। कई कंपनियों ने ऑफिस में वर्कशॉप आयोजित किए, जहां कर्मचारियों ने अपनी कहानियां साझा कीं। वैश्विक स्तर पर वेबकास्ट हुआ, जिसमें पुरुष अंदोलन के नेता बोले। भारत के आयोजन सबसे बड़े थे, क्योंकि यहां उमा चल्ला की विवासत है। लेकिन यह सिर्फ जश्न नहीं था – कई जगहों पर आत्महत्या रोकने और होमलेसनेस जैसे मुद्दों पर जागरूकता फैलाई गई। दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया में भी बड़े इवेंट हुए, लेकिन भारत का जोश अलग था। सोशल मीडिया पर #MensDay2025 ट्रेंड किया, जहां लाखों पोस्ट आए। यह दिन हमें सोचने पर मजबूर करता है कि पुरुषों की चुनौतियां अनदेखी क्यों रहती हैं। समाज में महिलाओं के अधिकारों

पर तो बात होती है, लेकिन पुरुषों के दर्द को भी समझना चाहिए। 2025 के आयोजनों से पता चला कि युवा पीड़ी बदलाव चाहती है – वे चाहते हैं कि लिंग समानता दोनों तरफ हो। कई एन्जीओ ने पुरुषों के लिए हेल्पलाइन की घोषणा की। कुल मिलाकर, यह साल दिखा कि पुरुष दिवस अब सिर्फ एक दिन नहीं, बल्कि एक आंदोलन बन गया है, जो संतुलन और समझ पर जोर देता है।

आगे की राह: संतुलन और सोच का नया दर्द

अंतरराष्ट्रीय पुरुष दिवस हमें भविष्य की ओर देखने को कहता है, जहां लिंग समानता का मतलब दोनों तरफ सम्मान है। 2025 के बाद, अगले साल का फोकस शायद और गहरा होगा – जैसे पुरुषों की शिक्षा और स्वास्थ्य पर। भारत में, जहां परिवार केंद्र में है, यह दिन पिता-पुत्र के रिश्ते को मजबूत करने का माध्यम बनेगा। लेकिन चुनौतियां बाकी हैं – समाज अभी भी पुरुषों से 'मजबूत' बने रहने की उम्मीद करता है, जो उन्हें अकेला कर देता है। उमा चल्ला जैसी आवाजें दिखाती हैं कि बदलाव संभव है, अगर हम सब मिलकर सोचें। वैश्विक स्तर पर, यह दिन महिलाओं के दिन के साथ तुलना न हो, बल्कि पूरक बने। 2025 ने साबित किया कि जश्न के साथ जागरूकता जरूरी है। युवाओं को सिखाना होगा कि भावनाएं दिखाना कमजोरी नहीं। सरकारें भी कदम उठा सकती हैं, जैसे पुरुषों के लिए काउंसलिंग सेंटर। यह दिन हमें याद दिलाता है कि मजबूत समाज वह है, जहां हर कोई अपनी कार्योंरियां स्वीकार करे। कुल मिलाकर, पुरुष दिवस एक आईना है – जो समाज की सच्चाई दिखाता है और बेहतर कल की ओर ले जाता है।

माघ मेला 2026 में क्या होगा, कब होगा, कैसे होगा ?



@ सौम्या चौबे

प्रयगराज की सुबहे कुछ विशेष होती हैं। जब ये धरती माघ महीने में संगम पर जुटते करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था से भर उठती है, तब यह दृश्य भारतीय आध्यात्मिक परंपरा का सबसे जीवंत और भव्य रूप बन जाता है। कहा जाता है कि माघ मेला केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं बल्कि वह अनेक यात्रा है जहां श्रद्धा, संकल्प, साधना और आत्मजागरण एक साथ प्रवाहित होते हैं। यह भारत की सांस्कृतिक आत्मा का वह उत्सव है जो हजारों वर्षों से निरंतर मनाया जा रहा है, और जिसकी परंपरा आज भी उतनी ही जीवंत है जितनी पुराणों के युग में थी।

जहां आस्था बनती है अनुभव

हर साल पौष पूर्णिमा से लेकर महाशिवरात्रि तक संगम क्षेत्र में फैला माघ मेला एक महीना नहीं बल्कि आध्यात्मिक समय का विस्तार है। यहां हर दिन का अर्थ अलग है। हर स्नान का महत्व विशिष्ट है और हर कदम पर श्रद्धालुओं को वह अनुभूति होती है जिसे शब्दों में बयां करना कठिन है। मान्यता है कि संगम में स्नान करने से न केवल पापों का क्षय होता है बल्कि जन्मों जन्म की बाधाएं भी दूर होती हैं। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती का यह मिलन स्थल प्राचीन शास्त्रों में देवभूमि कहा गया है। यह वही स्थान है जहां हजारों वर्षों से ऋषि, महापुरुष, तपस्वी और योगी साधना करते आए हैं। इसीलिए संगम पर लगा माघ मेला केवल एक धरोहर नहीं बल्कि राष्ट्र की आध्यात्मिक चेतना की धड़कन है।

2026 का माघ मेला कब से कब तक

पंचांग के अनुसार वर्ष 2026 में माघ मेला का शुभारंभ 3 जनवरी से होगा और यह 15 फरवरी तक चलेगा। इस पूरे कालखंड में छह प्रमुख स्नान पर्व निर्धारित हैं। इन्हीं स्नानों पर सबसे अधिक श्रद्धालु संगम तट की ओर उमड़ते हैं।

3 जनवरी 2026

सर्द हवाओं से भरी यह सुबह संगम पर विशेष रैनक लेकर आएंगी। पौष पूर्णिमा के साथ ही माघ मेले का औपचारिक शुभारंभ होगा। इस दिन श्रद्धालु सिर्फ पवित्र डुबकी लगाकर लौटते नहीं बल्कि कल्पवास का संकल्प लेकर एक नई आध्यात्मिक यात्रा आरंभ करते हैं।

कल्पवास वह अनुष्ठान है जिसमें एक महीना संगम तट पर रहकर भक्ति, साधना और संयम का जीवन जिया जाता है। कल्पवासी झोपड़ियों में रहते हैं। भोर में उठकर संगम स्नान करते हैं और पूरा महीना तप, नामस्मरण और दान में व्यतीत करते हैं। यह परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है और आज भी वैसी ही प्रामाणिक और जीवंत है।

14 जनवरी 2026

सूर्य देव जब धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करते हैं, तो यह आकाशीय परिवर्तन पृथ्वी पर शुभता का प्रतीक माना जाता है। इस दिन संगम तट पर सुबह से ही श्रद्धालुओं की विशाल भीड़ उमड़ पड़ती है। लोग सूर्य को अर्घ्य देते हैं और पुण्य की कामना करते हुए पवित्र स्नान करते हैं। मकर संक्रान्ति का स्नान माघ मेले का दूसरा

बड़ा शाही स्नान माना जाता है। कहा जाता है कि इस दिन गंगा में स्नान करने से अनेक जन्मों के पाप नष्ट होते हैं। यह स्नान केवल आस्था नहीं बल्कि प्रकाश की ओर बढ़ने का प्रतीक भी है।

18 जनवरी 2026

मौनी अमावस्या माघ मेला का हृदय है। यह वह दिन है जब संगम तट पर श्रद्धा अपने शिखर पर पहुंचती है। यह स्नान पर्व सबसे अधिक पवित्र और फलदायी माना जाता है। पुराणों में कहा गया है कि इस दिन सिर्फ पवित्र स्नान ही नहीं बल्कि मौन व्रत का पालन भी अत्यंत शुभ माना जाता है। मौन मनुष्य को भीतर झांकने का अवसर देता है। इस दिन लाखों श्रद्धालु मौन रहकर स्नान, ध्यान और दान करते हैं। मौनी अमावस्या का स्नान भारत की सांस्कृतिक एकता का दुर्लभ दृश्य भी प्रस्तुत करता है। यहां साधु, संत, गृहस्थ, तपस्वी, विद्वान, ग्रामीण और शहरी सभी एक ही पंक्ति में खड़े होकर संगम में आस्था की डुबकी लगाते हैं।

23 जनवरी 2026

बसंत ऋतु के स्वागत का यह पर्व माघ मेले में एक नई ऊर्जा लेकर आता है। सरस्वती पूजा का यह दिन विद्यार्थियों, कलाकारों और ज्ञान की खोज में लगे सभी लोगों के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। संगम तट पर इस दिन पीले वस्त्रों की आभा दूर तक फैल जाती है। लोग पवित्र स्नान कर देवी सरस्वती से बुद्धि और विवेक की कामना करते हैं। यह चौथा प्रमुख स्नान है और बेहद जहां मनुष्य स्वयं को पुनः खोजता है।

शुभ माना जाता है।

1 फरवरी 2026

कल्पवासियों के लिए यह दिन अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। पूरे महीने की तपस्या इस दिन पूर्ण मानी जाती है। स्नान, दान और व्रत इस दिन विशेष फल प्रदान करते हैं। माघी पूर्णिमा पर संगम क्षेत्र में आध्यात्मिक उत्साह अपने दूसरे चरण में पहुंच जाता है। कल्पवासी सुबह तीन बजे ही उठकर गंगा स्नान करते हैं और अपने पूरे महीने की साधना को चरम पर पहुंचाते हैं।

15 फरवरी 2026

माघ मेला महाशिवरात्रि के दिन अंतिम स्नान के साथ समाप्त होता है। शिव उपासना, रात्रि व्रत और ध्यान इस दिन अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। श्रद्धालु संगम में स्नान कर भगवान शिव से कल्याण की कामना करते हैं। माघ मेले का समापन भले ही इस दिन हो जाता है, पर इसकी स्मृतियां, भावनाएं और आध्यात्मिक ऊर्जा पूरे वर्ष मन और चेतना में प्रवाहित होती रहती हैं।

यह मेला क्यों इतना महत्वपूर्ण है, इसे समझने के लिए यहां आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं को देखना ही काफी है। कोई अपने बच्चों के भविष्य के लिए आता है। कोई अपने कर्मों के प्रायश्चित्त के लिए। कोई ध्यान और साधना से जुड़ने के लिए। और कोई बस उस अदृश्य शक्ति से मिलने के लिए जो संगम तट पर हर सुबह महसूस होती है। यह मेला भारत की सांस्कृतिक आत्मा का वह द्वारा है जहां मनुष्य स्वयं को पुनः खोजता है।

नए लेबर कोड से 77 लाख नौकरियाँ!

एसबीआई की रिपोर्ट ने खोल दिया बदलाव का नया अध्याय

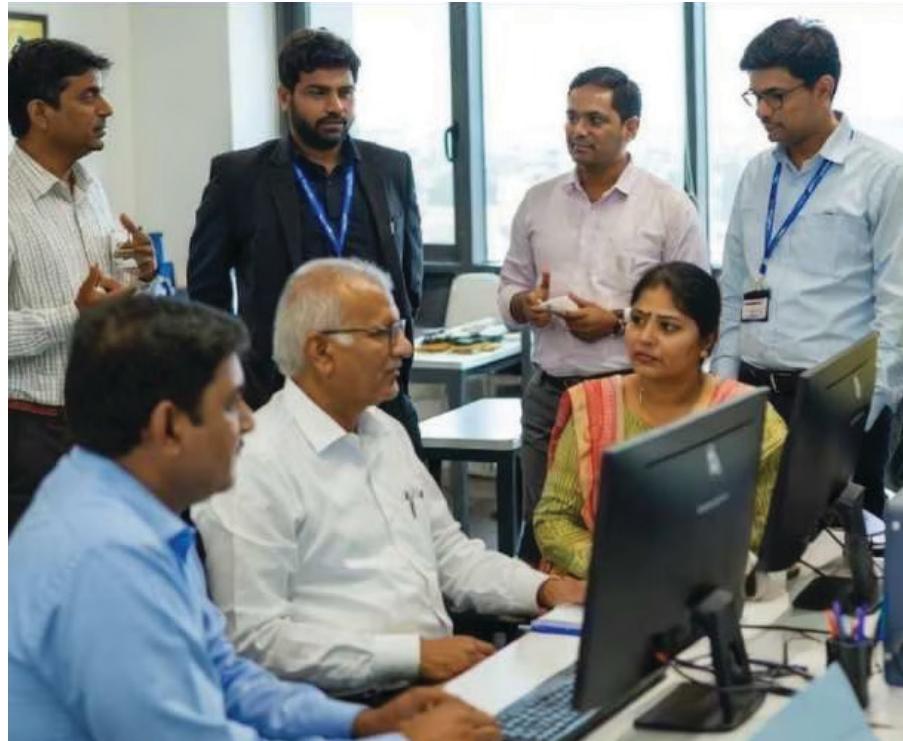
@ रिकू विश्वकर्मा

कई महीनों से नए लेबर कोड पर देश में मजदूरों को फायदा होगा या नुकसान? कोई कह रहा था कि यह कंपनियों के लिए बनाया गया है, तो कोई इसे मजदूरों के खिलाफ बता रहा था। बहस चल रही थी, लेकिन सब अपने-अपने अंदाज़ से बोल रहे थे। इसी बीच एसबीआई की एक रिपोर्ट आई और पूरी चर्चा का रास्ता ही बदल गया।

रिपोर्ट आने से पहले तक लेबर कोड को लेकर बस डर और शक ही ज्यादा थे। लेकिन एसबीआई ने पहली बार साफ और सरल शब्दों में बताया कि इन कोड्स को लागू करने से क्या असल बदलाव आएंगे। रिपोर्ट कहती है कि इससे रोजगार का रास्ता और साफ होगा, कंपनियों को नियम समझने में आसानी होगी और मजदूरों को औपचारिक काम का फायदा मिलेगा।

अनोपचारिक से औपचारिक तक की यात्रा

देश में करोड़ों लोग ऐसे हैं जो रोज मेहनत तो करते हैं, पर उनका नाम किसी सरकारी रजिस्टर में नहीं होता। न उनकी नौकरी पक्की, न कोई सुरक्षा। रिपोर्ट का कहना है कि नए लेबर कोड लागू होने के बाद बड़ी संख्या में ऐसे लोग पहली बार औपचारिक रोजगार में आएंगे। यानी न



सिर्फ काम मिलेगा बल्कि उसका रिकॉर्ड भी होगा। इससे उन्हें वे लाभ मिल सकेंगे जो अभी तक सिर्फ चुनिंदा लोगों को मिलते थे।

उद्योगों को एक ऊर्जी भाषा

सालों से कंपनियों की एक बड़ी मुश्किल यही थी कि हर राज्य में अलग नियम, अलग कागजी काम और

अलग निर्देश। इससे व्यापार करना मुश्किल होता था। रिपोर्ट बताती है कि नए लेबर कोड इस समस्या को खत्म करेंगे। पूरे देश में एक जैसी भाषा, एक जैसा कानूनी ढांचा और एक जैसा तरीका होगा। इससे कंपनियों के लिए फैसले लेना और काम बढ़ाना आसान होगा। सरकार शुरू से दावा करती रही है कि लेबर कोड मजदूरों और उद्योगों दोनों के हित में है। लेकिन विरोध करने वालों को यह बात समझ नहीं आ रही थी। एसबीआई रिपोर्ट ने पहली बार सरकार के दावों को ठोस आधार दिया। रिपोर्ट के आने के बाद माना जा रहा है कि इस बहस का रुख बदल जाएगा, क्योंकि अब बात भावनाओं की नहीं बल्कि आंकड़ों और अनुभव की हो रही है।

मजदूरों के लिए सुरक्षा बढ़ेगी

अब सबकी नजर इस बात पर है कि यह कोड कब लागू होंगे। विशेषज्ञों का कहना है कि जैसे ही ये जमीन पर उतरेंगे, भारत का रोजगार ढांचा ज्यादा साफ, मजबूत और आधुनिक हो जाएगा। मजदूरों के लिए सुरक्षा बढ़ेगी और कंपनियों के लिए काम का रास्ता आसान होगा। कहानी यही है कि एक रिपोर्ट आई और उसने महीनों से चल रही उलझान को थोड़ा साफ कर दिया। अब आगे की सुबह कैसी होगी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि लेबर कोड कितनी जल्दी और कितनी सटीक तरीके से लागू किए जाते हैं।



४०

पिता बनाम पति

४१

पिता आश्विर तुम घले ही गए
हर बार की तरह इस बार भी

बिना कुछ कहे!
तुम्हारे जाने के पदवाप सुनकर भी

मैं तुम्हें रोक नहीं पाई,
बरसों का अब्दिला क्षण मैं तोड़ना

संभव न हुआ,
शब्द बस काँप भर याए।

जब तुम पिता थे और
मैं थीं नवीं लाडो बिटिया

तुम मेरे संरक्षक भी थे
और आदर्श भी।

शायद तुम इस तथ्य से
अनजान ही रहे कि उम्र बढ़ने पर

हर बेटी...हर बच्चा
खी हो जाती है पिता।

और जानते हो न
स्त्रियों के दुख परस्पर जुँड़ जाते हैं

माँ की आँखों ने आँसू दे
तुम मुझसे मुस्कान नहीं या सकते थे।

माँ के पास होना
तुमसे दूर होना नहीं था

माँ के सम्मान की कामना
तुम्हारे अपमान का पर्याय भी न थी।

लैकिन तुमने कर लिया खुद को अकेला
हमारी पुकारों को कर दिया अनसुना।

और मौन निभाते रहे जिम्मेदारियाँ
जीवन घलता रहा पिता,

लैकिन उसमें सहजता का लावण्य न रहा
जो बीत सकता था सम्भिलित कर कर्त्ता मैं

उस पल मुस्कानों में भी साम्य न रहा।
हम प्रतीक्षित रहे पत्थर मैं

कभी तो उगेंगे कोपल
किंतु लमारा झेल वह बरसात न कर पाया

तुम्हारे ताप के आगे सब बूँदे
पहले ही भाय बन तिरोहित होती गई।

अब बच्ची हैं तो लपटों में तपी बस कुछ राख
इन बुझे श्रृंगारों में तुम्हारे स्नेह की नगी है

पिता, तुम जान लो, तुम हर गए हो!
इस बार तुम अकेले नहीं जा याए

तुम्हारे साथ घले गए हैं
लगारे सारे अलगाव, मतभेद

और शायद उन से कहीं गहरे उग आए
मनभेद भी।

दूर जाकर तुम पास आ गए हो पिता
अब किर से कह सकती हूँ तुमसे मन की सब बातें

ठोक सकती हूँ तुम्हें तुम्हारी गलतियों पर
गर्वित हो सकती हूँ तुम्हारी उपलब्धियों पर।

अब तुम्हारे और मेरे बीच माँ नहीं हैं
और न ही है...

माँ के साथ किया तुम्हारा रुखा व्यवहार
पर नाँ जाने क्यों अब दिन भर रोती है

क्या अब भी तुमसे वह दिल की कुछ न कहती है?

४०

स्वप्न और यथार्थ के मध्य चहल-क्रदमी

४१

सपने उदार होते हैं
आप देख रहे होते हो

आप गिलहरी को काँधे पर बिठा लेते हो
गिलहरी माँ का साथ बन जाती है।

इस कदर नकघड़ी है
उसे नहीं भाता यूँ

पलकों को मूँद
सुख की प्रतीक्षा मैं

नीला नेघाच्छादित आकाश
फूलों की वादी

कुछ थप-थपाहट के बाद
सुनते हो आप गिलहरी को करते—

सपनों का एनक्रोचमेंट
अव्यथा कैसा सुखद होता

व्यवधान रहित नींद सो जाना।

सुन रहे होते हो रवींद्र संगीत
पास ही गोगरा की ज़ाड़ी से

उठ जाओ, याय ठंडी हो रही है।
उनींदी आँखों से देखते हो आप

दैव्य में लिपटे पलों में
लकीकत का पलक झपका

भागती आती है गिलहरी
आपकी रुथेली पर बैठ जाती है

गिलहरी को माँ में तब्दील होते।
लकीकत जाने क्यों

स्वप्न हो जाना!
सैमल के नर्म बिछोने पर

निधि अव्रवाल

नई पीढ़ी की सुपरिचित कवयित्री

मक्का-मदीना मार्ग की भयावह आग

45 हाजी जले, शोएब की चमत्कारिक बचत, एक परिवार का पूरा वंश मिटा

हादसे की वो काली रात: बस और टैक्टर की टक्कर ने उजाड़ दी जिंदगियां

17 नवंबर 2025 की देर रात, सऊदी अरब के पवित्र मक्का से मदीना जा रही एक बस पर मौत ने हमला बोल दिया। यह बस करीब 43 से 46 भारतीय उमराह यात्रियों से भरी हुई थी, जो हैदराबाद से आए थे। रात के करीब 1:30 बजे, मदीना के पास हाईवे पर बस एक डीजल टैक्टर से टक्कर गई। टैक्टर इतनी जोरदार थी कि बस में आग लग गई और धुआं चारों तरफ फैल गया। यात्रियों को बाहर निकलने का मौका भी न मिला। आग ने सब कुछ लील लिया। मरने वालों में 42 से 45 भारतीय थे, ज्यादातर हिंदुस्तान के तेलंगाना राज्य से। यह हादसा मक्का-मदीना कॉरिडोर पर हुआ, जो लाखों मुसलमानों की आस्था का रास्ता है। लेकिन इस रात यह रास्ता मौत का दरवाजा बन गया। भारतीय दूतावास ने जल्दी ही एक कंट्रोल रूम खोला, जहां परिवार वाले जानकारी ले सकें। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने शोक जताया और कहा कि सरकार हर मदद करेगी। तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने भी अधिकारियों को तुरंत कार्रवाई के आदेश दिए। यह बस उमराह यात्रा के लिए गई थी, जो हज से थोड़ी छोटी तीर्थयात्रा है। यात्री 9 नवंबर को हैदराबाद से रवाना हुए थे। हादसे में बस पूरी तरह जल गई, लाशें पहचानना मुश्किल हो गया। डॉक्टरों को डीएनए टेस्ट से ही शिखाना करनी पड़ी। यह घटना सिर्फ आंकड़ों की नहीं, बल्कि उन परिवारों की कहानी है जो खुशी से निकले थे, लेकिन कभी लौटे नहीं। सोचिए, एक बस यात्रा जो धार्मिक शांति का प्रतीक थी, वह कैसे इतनी भयानक बन गई। सऊदी अधिकारियों ने जांच शुरू की है, लेकिन सबाल यह है कि ऐसी त्रासदी क्यों बार-बार हो रही है। यह हादसा हरमें सोचने पर मजबूर करता है कि आस्था के रास्ते पर सुरक्षा कितनी जरूरी है। परिवारों का दर्द देखकर दिल भर आता है, लेकिन उम्मीद है कि इससे सबक लिया जाएगा।

मक्का-मदीना कॉरिडोर: दुनिया की सबसे खतरनाक सड़कों में शुमार, त्यों?

मक्का और मदीना के बीच का यह 450 किलोमीटर लंबा हाईवे आस्था का प्रतीक है, लेकिन सड़क हादसों का केंद्र भी। लाखों हाजी और उमराह यात्री हर साल इसी रास्ते से गुजरते हैं, लेकिन यह मार्ग इतना जोखिम भरा क्यों है? सऊदी अरब की सड़कें दुनिया की सबसे खतरनाक मानी जाती हैं। आंकड़ों के मुताबिक, यहां हर साल 4,000 से ज्यादा लोग सड़क हादसों में मरते हैं। मक्का-मदीना रोड पर ही पिछले कुछ सालों में दर्जनों बड़े हादसे हुए हैं। वजह कई हैं: तेज रफ्तार बसें, भारी ट्रैफिक, खराब रखरखाव और ड्राइवरों की थकान। हज और उमराह के मौसम में तो हालात और बिगड़ जाते हैं, क्योंकि सड़कें तीर्थयात्रियों से पर जाती हैं। एक रिपोर्ट कहती है कि सऊदी में सड़क मौतों की दर दुनिया में सबसे ऊपर है, 27.4 प्रति लाख लोग। मक्का-मदीना पर टैक्टर और बसों की टक्कर आम है, क्योंकि डीजल जैसे खतरनाक सामान ले जाने वाले वाहन भी इसी रास्ते से जाते हैं। मौसम की मार भी लगती है, रेगिस्तानी इलाका होने से रेत का तूफान दिखाई कम देता है। सरकार ने सख्ती की कोशिशें की हैं, जैसे स्पीड



कैमरे लगाना और ड्राइवर ट्रेनिंग, लेकिन अभी भी कमी है। इस हादसे ने फिर साबित कर दिया कि तीर्थयात्रा के दौरान सुरक्षा पर ज्यादा ध्यान देना पड़ेगा। सोचिए, जो रास्ता जनत का दरवाजा खोलता है, वह मौत क्यों बांट रहा है? बैलेस्टड नजरिए से देखें तो सऊदी सरकार लाखों यात्रियों को संभाल रही है, लेकिन छोटी-छोटी लापरवाहियां बड़ी त्रासदी ला देती हैं। अगर सही प्लानिंग हो, जैसे अलग लेन तीर्थयात्रियों के लिए, तो शायद ऐसी घटनाएं कम हों। यह मार्ग आस्था का है, लेकिन जिंदगियों का भी ख्याल रखना होगा। परिवारों को न्याय मिले, और भविष्य में कोई मां न रोए।

शोएब की वो किस्मत: ड्राइवर से बात ने बचाई जान, लेकिन परिवार खोदिया

मोहम्मद अब्दुल शोएब, 24 साल का नौजवान हैदराबाद का, जिसकी जिंदगी एक पल में बदल गई। वह प्राइवेट कंपनी में काम करता था और पहली बार उमराह पर गया था। उसके साथ मां-बाप, दादा और चाचा का परिवार था। बस के आगे की सीट पर बैठा था, ड्राइवर के पास। रात भर नींद न आने पर ड्राइवर से गपशप कर रहा था, समय काटने के लिए। जब टैक्टर हुई, तो बस का अगला हिस्सा टूट गया। शोएब ने फुर्ती दिखाई, खिड़की से कूद गया ड्राइवर के साथ। कुछ ही सेकंड बाद आग ने बस को घेर लिया। बाकी यात्री अंदर फंस गए, बाहर न निकल सके। शोएब को चोटें आई, लेकिन जिंदा रहा। अब वह मदीना के जर्मन हॉस्पिटल के आईसीयू में है, हालत गंभीर। उसके रिश्तेदार मोहम्मद तहसीन ने बताया, सुबह 5:30 बजे फोन आया, शोएब ने कहा कि वह बच गया, लेकिन बाकी सब आग में जल गए। मक्का में रुक्क तो कुछ साथियों को फोन किया, अपनी कहानी सुनाई। उसके पिता अब्दुल खदीर 56 साल के, मां गौसिया बेगम 46

की, दादा मोहम्मद मौलाना और चाचा के तीन सदस्य खो दिए। शोएब की यह बचत चमत्कार जैसी लिया गयी है, लेकिन दर्द भी कम नहीं। डॉक्टर कहते हैं, जल्द ठीक होगा, लेकिन मानसिक सदमा लंबा चलेगा। सोचिए, एक छोटी बातचीत ने जान बचाई, लेकिन परिवार को खोना कितना भारी। यह कहानी हिम्मत सिखाती है, लेकिन सवाल भी उठाती है कि बस में इमरजेंसी एग्जिट क्यों न थे। शोएब जैसे युवा को अब नई जिंदगी शुरू करनी है, बिना अपनों के। बैलेस्टड तरीके से देखें, उसकी फुर्ती ने सबको अलर्ट किया, लेकिन सिस्टम की कमियां साफ हैं। उम्मीद है, वह जल्द स्वस्थ हो और अपनी कहानी से दूसरों को सावधान करे। जिंदगी अनमोल है, छोटी सतर्कता बड़ी तबाही रोक सकती है।

शेख परिवार का अंतिम सफर: तीन पीढ़ियां एक साथ, खुशी से निकले, दर्द में लौटे

हैदराबाद के विद्युतगर इलाके का शेख परिवार, जो कभी हंसी-खुशी से भरा था, अब खाली घर है। 18 सदस्य, तीन पीढ़ियों के, उमराह पर गए थे। सरदार नसीरुद्दीन शेख 70 साल के, रियार्ड रेलवे कर्मचारी, पत्नी अख्तर बेगम 62 की। उनके बेटे सलाहुद्दीन 42 साल के, बेटियां अमीना बेगम 44, शबाना बेगम 40, रिजवाना बेगम 38। बहुएं फरहाना सुल्ताना 37 और साना सुल्ताना 35। फिर दस नाती-पोते: अनीस फातिमा 25, जैनुद्दीन 12, रिदा ताजीन 10, महरिश फातिमा 10, मरियम फातिमा 7, उमैजा फातिमा 5, तस्मिया तहरीन 3, हूजैफा जाफर 3, उजैरुद्दीन 3, मोहम्मद शजैन 2 साल के। 9 नवंबर को हैदराबाद से रवाना हुए, नसीरुद्दीन लीडर बने। बस में सब साथ थे, मदीना जा रहे। लेकिन हादसे ने सब छीन लिया। आग में जिंदा जल गए। सिर्फ एक बेटा सिराज शेख, जो अमेरिका में रहता है, बच गया। पड़ोसियों का कहना है,

घर में अब सन्नाटा है, जहां पहले बच्चों की चहल-पहल रहती थी। बहनों के पति राम नगर और आसिफ नगर में रहते हैं, उनका दुख असीम। यह परिवार तीन मंजिला घर में रहता था, 11 सदस्य घर के, 7 रिश्तेदार आए थे। सोचिए, एक यात्रा ने पूरा वंश मिटा दिया। खुशी के पल जो सोचे थे, वे आंसुओं में बदल गए। बैलेस्टड नजरिए से, यह त्रासदी आस्था की कीमत बताती है, लेकिन परिवार की एक जुट्टा भी दिखाती है। अब रिश्तेदार शब्दों की पहचान और अंतिम संस्कार के इंतजार में हैं। यह कहानी दर्द की है, लेकिन मजबूत बने रहने की भी। समाज को सोचना चाहिए, कैसे ऐसे परिवारों की मदद करें। जिंदगी के इस कड़वे सबक से सब सीखें।

देशव्यापी शोक और आगे का रास्ता: मदद के बाद, लेकिन सबक जरूरी

यह हादसा सिर्फ सऊदी तक सीमित नहीं, पूरे हिंदुस्तान में शोक की लहर दौड़ा दी। हैदराबाद में हजारों ने मोमबत्तियां जलाई, दुआएं मार्गीं। भारतीय अमेरिकन मुस्लिम कार्डिनल ने बयान जारी कर दुख जताया। सरकार ने विशेष विमान भेजे शव लाने के लिए। सऊदी ने मुआवजा देने का ऐलान किया, लेकिन परिवारों को इंसाफ चाहिए। यह घटना सोचने पर मजबूर करती है कि तीर्थयात्रा के नाम पर जोखिम क्यों? उमराह पर जाने वाले लाखों भारतीयों के लिए सख्त गाइडलाइंस जरूरी। ट्रैवल एजेंट्स पर निगरानी, बसों में फायर सिस्टम, और ड्राइवर रोटेशन। सऊदी और भारत मिलकर कॉरिडोर को सुरक्षित बनाएं। शोएब और बचे परिवारों को काउंसलिंग मिले। बैलेस्टड तरीके से कहें, आस्था पर रोक न लगे, लेकिन सुरक्षा पहले। यह त्रासदी दर्द दे गई, लेकिन एक जुट्टा भी दिखाई। उम्मीद है, अगली यात्रा सुरक्षित हो। सोचिए, जिंदगियां बचाना कितना आसान हो सकता है।

क्या हर घटना पर सुप्रीम कोर्ट दौड़े?

अदालत ने उठाया बड़ा सवाल

नफरती भाषण पर याचिका की सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी, लेकिन सरल भाषा में समझाए क्या हुआ

@ रिंग विश्वकर्मा

दश की सबसे बड़ी अदालत में मंगलवार का दिन हमेशा की तरह व्यस्त था। अदालत कक्ष में लोगों की भीड़ थी, पत्रकार बैठे थे और कई वकील अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। इसी बीच एक बेहद दिलचस्प मामला सामने आया, जिसमें एक वकील ने आरोप लगाया कि देश के कुछ हिस्सों में एक समुदाय के सामाजिक और आर्थिक बहिष्कार की अपीलें की जा रही हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे मामलों पर तुरंत कार्रवाई नहीं हो रही है और सुप्रीम कोर्ट को दखल देना चाहिए। अदालत की बैंच में न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता बैठे थे। दोनों ने पूरे मामले को ध्यान से सुना। और फिर जो कहा, उसने न्यायालय कक्ष में बैठे सभी लोगों का ध्यान खींच लिया।

“हम हर छोटी घटना की निगरानी नहीं कर सकते।”

पीठ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट देश भर में होने वाली हर घटना की निगरानी नहीं कर सकती। न्यायमूर्तियों ने बेहद शांत लेकिन सख्त आवाज में कहा कि देश में पहले से ही पुलिस थाने, कानून और हाई कोर्ट मौजूद हैं। उनका कहना था कि हर छोटी घटना को सुप्रीम कोर्ट के सामने लाना न तो संभव है और न ही प्रणाली को सही दिशा में ले जाता है।

अदालत ने साफ कहा कि हम इस याचिका की आड़ में कोई नया कानून नहीं बना रहे हैं। निश्चिंत रहें, हम देश के किसी छोटे हिस्से में होने वाली हर छोटी-मोटी घटना पर कानून बनाने या निगरानी करने के लिए इच्छुक नहीं हैं। इसके लिए राज्य की व्यवस्था है। पुलिस है। और जरूरत पड़े तो हाई कोर्ट भी है।” यह बात अदालत ने इसलिए कही क्योंकि याचिकाकर्ता सीधे सुप्रीम कोर्ट के पास आ गया था, बजाय पहले हाई कोर्ट में जाने के।

याचिकाकर्ता की दलील

वकील ने कहा कि राज्य के अधिकारी ऐसे मामलों को गंभीरता से नहीं ले रहे। इसलिए उन्होंने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। उन्होंने बताया कि उन्होंने एक लंबित याचिका में नया आवेदन दिया है जिसमें अभद्र भाषा और आर्थिक बहिष्कार की अपीलों का मुद्दा उठाया गया है। अदालत ने उसी समय आवेदन देखा और पाया कि कुछ लोग सार्वजनिक मंचों पर ऐसे आह्वान कर रहे हैं। इस पर वकील ने कहा कि यह केवल आम लोग नहीं हैं। बल्कि कुछ चुने हुए जनप्रतिनिधि भी ऐसे बयान दे रहे हैं। यह सुनकर अदालत ने पूछा, “क्या आप चाहते हैं कि सुप्रीम कोर्ट देश के हर शहर, कस्बे या गांव में होने वाली घटनाओं पर नजर रखे?” यह सवाल courtroom में बैठे हर व्यक्ति के मन पर असर छोड़ गया। अदालत का संदेश साफ था कि जहाँ पहली व्यवस्था मौजूद है, वहाँ सुप्रीम कोर्ट को हर बार हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।



‘राज्य खुद कार्रवाई करे, सुप्रीम कोर्ट आखिरी मंच है’

वकील ने अदालत को याद दिलाया कि पहले सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश दिया था कि अगर राज्य कार्रवाई न करे तो पुलिस को suo-motu यानी खुद से कार्रवाही करनी चाहिए। नहीं तो अवमानना हो सकती है। उन्होंने कहा कि

चूंकि पुलिस और प्रशासन कार्रवाई नहीं कर रहा, इसलिए मामला सीधे सुप्रीम कोर्ट के पास लाया गया। सॉलिसिटर जनरल ने जवाब दिया कि कोई भी नफरत फैलाने वाली भाषा में लिप्त नहीं हो सकता। यह हमारा स्पष्ट रुख है। लेकिन शिकायत करते समय चयनात्मक नहीं होना चाहिए। यह बात अदालत ने भी महत्वपूर्ण मानी।

अदालत का अंतिम रुख

सुप्रीम कोर्ट ने याचिकाकर्ता से कहा कि यदि किसी राज्य में कोई घटना हो रही है और प्रशासन कार्रवाई नहीं कर रहा, तो उस राज्य के हाई कोर्ट के पास जाना चाहिए। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ ने कहा कि यदि सच में जनहित शामिल है, तो उच्च न्यायालय निश्चित रूप से मामले को गंभीरता से देखेंगे। आप एक व्यवस्था को छोड़कर सीधे यहाँ नहीं आ सकते। अदालत ने कहा कि देश में कानून व्यवस्था बनी हुई है, और अदालतें तथा राज्य व्यवस्था इस तरह के मामलों को देखने के लिए सक्षम हैं।

सुप्रीम कोर्ट ने अंत में कहा कि आपको जिस भी राज्य में कोई समस्या हो, आप वहाँ के हाई कोर्ट से उचित राहत मांग सकते हैं। इसके लिए प्रक्रियाएं पहले से ही तय हैं। सुप्रीम कोर्ट का संदेश यह भी है कि देश की न्यायिक और प्रशासनिक व्यवस्था को मजबूत बनाने के लिए हर स्तर पर काम होना चाहिए।

व्यवस्था पर भरोसा है जरूरी

घृणा भाषण हो, सामाजिक बहिष्कार की अपीलें हों या कोई और संवेदनशील मुद्दा, ये सभी गंभीर मामले हैं। लेकिन सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि इन मामलों से निपटने के लिए देश में पहले ही व्यवस्था मौजूद है। हर समस्या के लिए शीर्ष अदालत के दरवाजे खटखटाना समाधान नहीं है। सुप्रीम कोर्ट ने यह भी स्पष्ट संकेत दिया है कि आगे आप जनहित का दावा करते हैं, तो उसमें किसी तरह का पक्षपात नहीं होना चाहिए।



सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता का तर्क

सरकार की ओर से मौजूद सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता भी इस चर्चा में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि जनहित किसी एक धर्म या समुदाय तक सीमित नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि अगर हम अभद्र भाषा की बात करें, तो यह समस्या हर जगह है, हर वर्ग में है। सभी धर्मों में ऐसी भाषा का इस्तेमाल हो रहा है। इसलिए समाधान भी सभी के लिए समान होना चाहिए। तुषार मेहता ने ये भी कहा कि यदि याचिकाकर्ता वास्तव में जनहित का दावा करते हैं, तो उन्हें चयनात्मक नहीं होना चाहिए।

मतलब अगर वे घृणा भाषण के खिलाफ खड़े होना चाहते हैं, तो किसी एक पक्ष को नहीं बल्कि हर प्रकार के घृणा भाषण को सामने लाना चाहिए।

क्या लौट रहा है 'करोशी' का पुराना साया? जापान में काम की थकान नई बहस का विषय

रात के 3 बजे की मीटिंगः प्रधानमंत्री का फैसला जो सबको चाहिए

जापान की नई प्रधानमंत्री सानो ताकाइची ने हाल ही में एक ऐसा कदम उठाया है जो पूरे देश में काम की संस्कृति पर सवाल खड़े कर रहा है। नवंबर 2025 में, उन्होंने अपने सहयोगियों को रात के 3 बजे बुलाकर बजट कमिटी की तैयारी के लिए मीटिंग की। यह खबर आते ही सोशल मीडिया पर छा गई और कई लोगों ने इसे ओवरवर्क का प्रतीक बताया। ताकाइची खुद रात में सिर्फ 2 से 4 घंटे सोती हैं और उन्होंने कहा है कि वे वर्क-लाइफ बैलेंस को भूलकर सिर्फ काम पर फोकस करेंगी। लेकिन यह बात उन परिवारों को चुभ गई जिन्होंने करोशी यानी ओवरवर्क से मौत का दर्द झेला है। पूर्व प्रधानमंत्री नोदा योशिहिको ने इसे उदास करने वाली घटना कहा, जबकि एलडीपी के एक सदस्य ने सलाह दी कि ताकाइची को 'कुशलता से आलसी बनना' सीखना चाहिए। यह घटना जापान की पुरानी समस्या को फिर से सामने ला रही है, जहां काम को जीवन से ऊपर रखना एक तरह की परंपरा बन गई है। टोक्यो के अधिकारी अब 4-दिन के वर्कवीक को बढ़ावा दे रहे हैं ताकि कर्मचारियों को ज्यादा आराम मिले और करोशी जैसी त्रासदी कम हो। लेकिन प्रधानमंत्री का यह रवैया सवाल पैदा करता है कि क्या सरकार खुद अपने नियमों का पालन कर रही है? विशेषज्ञ कहते हैं कि ऐसी घटनाएं युवाओं को डराती हैं और जन्म दर गिरने का एक कारण भी बन रही है। कुल मिलाकर, यह मीटिंग सिर्फ एक रात की बात नहीं, बल्कि जापान की काम की संस्कृति में बदलाव की जरूरत को दर्शाती है। यहां कामकाजी लोग औसतन 1636 घंटे सालाना काम करते हैं, जो जी 7 देशों में सबसे ज्यादा है। अगर नेता खुद ओवरवर्क को बढ़ावा देंगे, तो नीचे के कर्मचारी कैसे संभलेंगे? यह बहस हमें सोचने पर मजबूर करती है कि काम जीवन को समृद्ध बनाए या नष्ट।

आंकड़ों की सच्चाई: करोशी के मानले क्यों बढ़ रहे हैं?

जापान में करोशी यानी ओवरवर्क से होने वाली मौतें और मानसिक स्वास्थ्य की समस्याएं अब रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई हैं। 2025 के सफेद कागज के मुताबिक, वित्तीय वर्ष 2024 में 3780 लोगों ने काम से जुड़ी मानसिक तनाव के लिए मुआवजे की अर्जी दी, जिसमें से 1055 को मंजूरी मिली। यह संख्या 15 साल पहले की तुलना में लगभग तीन गुना ज्यादा है और लगातार छठे साल रिकॉर्ड बना रही है। 2024 के एक अध्ययन में पाया गया कि 883 लोगों को ओवरवर्क से मानसिक विकारों का प्रमाणपत्र मिला, जो पिछले साल से 173 ज्यादा है। इनमें 79 मामलों में आत्महत्या या कोशिश शामिल थी, और 216 में दिल या दिमाग की बीमारियां। रेस्तरां मैनेजरों का हाल तो और बुरा है – 30 प्रतिशत से ज्यादा 60 घंटे हफ्ते में काम करते हैं। शिक्षकों में भी समस्या गंभीर है; 2022 के सर्वे में 77 प्रतिशत जूनियर हाई स्कूल टीचर मासिक 45 घंटे से ज्यादा ओवरटाइम करते दिखे। 2015 से 2023 के बीच 38 सरकारी स्कूल टीचर ओवरवर्क से मर चुके



हैं। औसत नींद का समय जी7 में सबसे कम 6 घंटे 18 मिनट है, जो चीन और दक्षिण कोरिया से भी कम। पेड़ लीव लेने का औसत सिर्फ 10.9 दिन है, हालांकि 2022 में 62.1 प्रतिशत लोगों ने लीव ली। ये आंकड़े बताते हैं कि जापान की काम की संस्कृति में सुधार की जरूरत है, लेकिन महामारी के बाद हाइब्रिड वर्क ने थोड़ी राहत दी है। फिर भी, छोटे व्यवसायों में नियमों का पालन कमज़ोर है। विशेषज्ञ कहते हैं कि मानसिक स्वास्थ्य पर फोकस बढ़ाने से ये संस्कृति कम हो सकती है। यह समस्या सिर्फ आंकड़ों तक सीमित नहीं, बल्कि परिवारों और समाज को तोड़ रही है। जापान को इन आंकड़ों से सीखना होगा कि काम की दौड़ में जीवन न खो जाए।

वर्कस्टाइल रिफॉर्म लॉ: जापान का कदम जो बदलाव लारहाठे

जापान का वर्क स्टाइल रिफॉर्म लॉ, जिसे 2019 में लागू किया गया, ओवरवर्क को रोकने का एक बड़ा प्रयास है। इस कानून का मुख्य उद्देश्य काम के घंटों पर सख्त सीमा लगाना है – मासिक ओवरटाइम 45 घंटे और सालाना 360 घंटे से ज्यादा नहीं। व्यस्त समय में भी मासिक 100 घंटे और औसत 80 घंटे से ऊपर नहीं जाना चाहिए। छोटे-मध्यम व्यवसायों को 2025 तक 200 प्रतिशत ओवरटाइम प्रीमियम लागू करना होगा। 2025 में कई अपडेट आ रहे हैं, जैसे अनिवार्य रिटायरमेंट उम्र 65 साल तक बढ़ाना। कंपनियों को कर्मचारियों को 65 साल तक काम जारी रखने का मौका देना होगा, चाहे रिटायरमेंट उम्र बढ़ाकर, खत्म करके या फिर से हायर करके। 70 साल तक के लिए यह वैकल्पिक है। चाइल्डकेयर और 15 हफ्ते मैटरनिटी (75 प्रतिशत पे) के साथ। चौथा जर्मनी (74.7), 30 दिन लीव और 14 हफ्ते फुल पेड़ मैटरनिटी। पांचवां नॉर्वे (74.2), 35 दिन लीव और 49 हफ्ते फुल पेड़ मैटरनिटी। ये देश काम के कानूनों को सबसे ज्यादा व्यवस्थित तरीके से लागू करते हैं, जहां

साल से कम उम्र के बच्चों के लिए घटेवार नर्सिंग लीव और फैमिली केयर लीव बढ़ाई गई। 100 से ज्यादा कर्मचारियों वाली कंपनियों को चाइल्डकेयर लीव रेट मॉनिटर करना और लक्ष्य सेट करना होगा। गर्भवती कर्मचारियों से काम-बच्चे के संतुलन पर बात करनी होगी। नर्सिंग केयर के लिए 40 साल से ऊपर के कर्मचारियों को जल्दी जनकारी देनी होगी। ये बदलाव फ्लॉक्सिमल वर्किंग को बढ़ावा देते हैं, जैसे रिमोट वर्क और शॉर्टर ऑवरसें। लेकिन चुनौती यह है कि सांस्कृतिक बदलाव कानून से धीमा है। 2016 में एक युवती की ओवरटाइम से आत्महत्या के बाद यह कानून आया, जो दिखाता है कि सुधार जरूरी थे। कुल मिलाकर, यह लॉ जापान को बेहतर दिशा दे रहा है, लेकिन अमल पर नजर रखनी होगी।

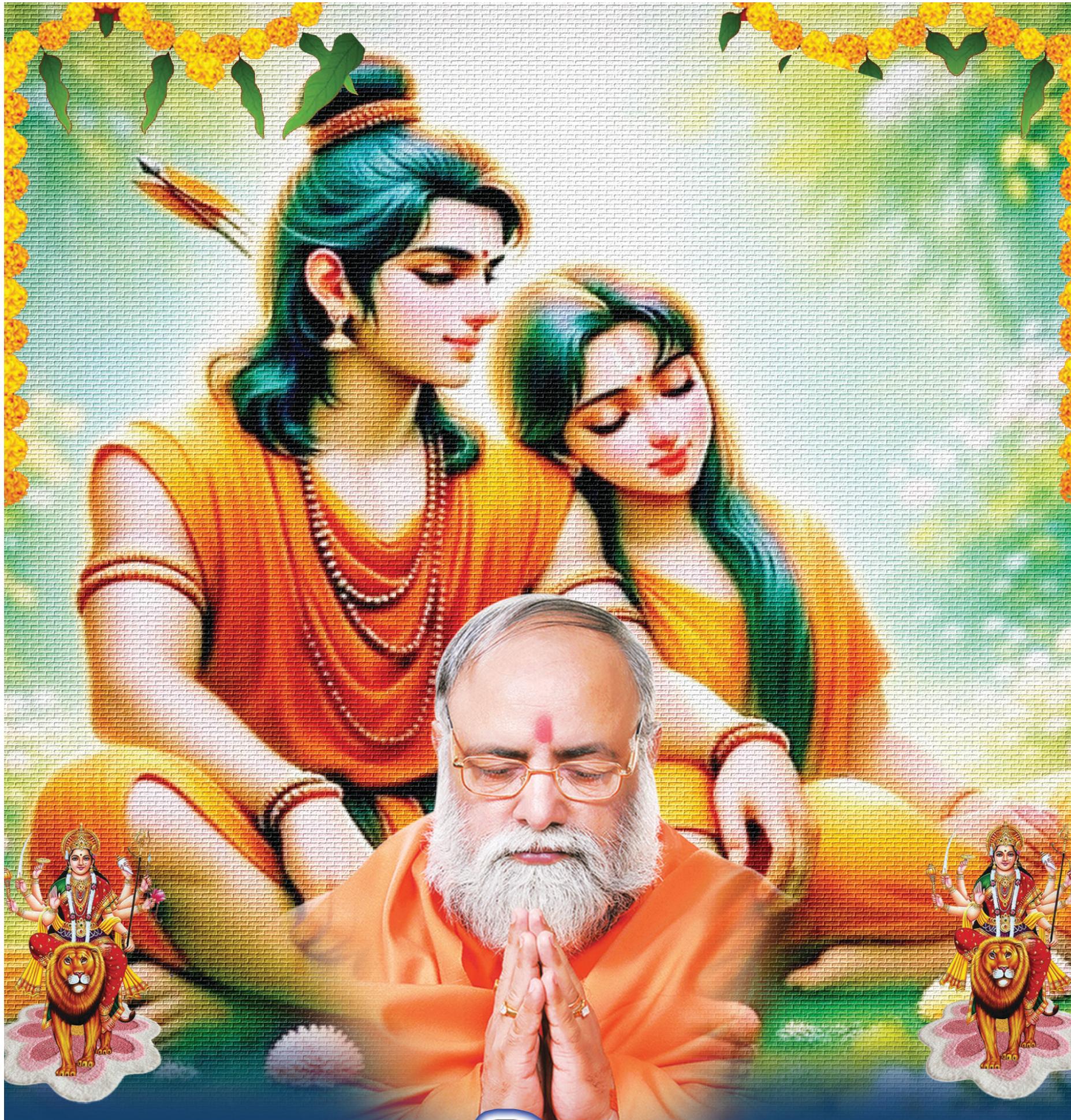
दुनिया की नजर: न्यूजीलैंड में काम-जीवन का सबसे अच्छा संतुलन

दुनिया भर में काम के सुधारों की बात करें तो न्यूजीलैंड 2025 के ग्लोबल लाइफ-वर्क बैलेंस इंडेक्स में टॉप पर है, स्कोर 86.9। यहां 32 दिन की स्टैच्यूट्री एनुअल लीव और 26 हफ्ते की फुल पेड़ मैटरनिटी लीव मिलती है। यूनिवर्सल हेल्थकेयर और 16.42 डॉलर प्रति घंटे की हाई मिनिमम वेज इसे खास बनाती है। दूसरे नंबर पर आयरलैंड है (स्कोर 81.2), जहां 30 दिन लीव और 26 हफ्ते मैटरनिटी (70 प्रतिशत पे) हैं। तीसरा बेल्जियम (75.9), 30 दिन लीव और 15 हफ्ते मैटरनिटी (75 प्रतिशत पे) के साथ। चौथा जर्मनी (74.7), 30 दिन लीव और 14 हफ्ते फुल पेड़ मैटरनिटी। पांचवां नॉर्वे (74.2), 35 दिन लीव और 49 हफ्ते फुल पेड़ मैटरनिटी। ये देश काम के कानूनों को सबसे ज्यादा व्यवस्थित तरीके से लागू करते हैं, जहां

कर्मचारी अधिकार मजबूत हैं। नॉर्डिक देश जैसे नॉर्वे और डेनमार्क लेबर राइट्स में आगे हैं, जहां ट्रेड यूनियन मजबूत हैं और ओवरटाइम पर सख्ती है। यूरोप में फ्रांस और स्पेन 'राइट टू डिस्कनेवर्ट' कानून चला रहे हैं, जो काम के बाहर ईमेल चेक करने से रोकता है। अमेरिका इस इंडेक्स में आखिरी पर है, जहां वर्क-लाइफ बैलेंस गिर रहा है। जापान इनसे सीख सकता है कि कैसे लीव और हेल्थकेयर को प्राथमिकता देकर उत्पादकता बढ़ाई जाए। न्यूजीलैंड का मॉडल दिखाता है कि कम काम के घंटे ज्यादा खुशी और अर्थव्यवस्था लाते हैं। लेकिन हर देश की संस्कृति अलग है, इसलिए जापान को अपने तरीके से अपनाना होगा।

आगे का सफर: संतुलन के दूर

जापान में ओवरवर्क की यह बहस हमें सोचने पर मजबूर करती है कि काम जीवन का हिस्सा है या बोझ। प्रधानमंत्री ताकाइची का उत्साह सराहनीय है, लेकिन स्वास्थ्य को नजरअंदाज करना खतरनाक। वर्क रिफॉर्म लॉ जैसे कदम सकारात्मक हैं, पर छोटे व्यवसायों और शिक्षकों तक पहुंचाना चुनौती है। दुनिया से तुलना करें तो न्यूजीलैंड का तरीका प्रेरणा देता है, जहां लीव और हेल्थकेयर से लोग ज्यादा उत्पादक होते हैं। जापान को 4-दिन वर्कवीक जैसे प्रयोग बढ़ाने चाहिए, साथ ही मानसिक स्वास्थ्य पर फोकस। युवा पीढ़ी पहले ही काम से दूर भाग रही है, इसलिए बदलाव जरूरी। कंपनियों को संस्कृति बदलनी होगी, जहां 'नो ओवरटाइम' को सम्मान मिले। सरकार, नियोक्ता और कर्मचारियों का सहयोग ही संतुलन लाएगा। आखिरकार, एक स्वस्थ समाज ही मजबूत अर्थव्यवस्था बनाता है। क्या जापान यह सबक लेगा? समय बताएगा।



प्रभु कृपा दुर्घट निवारण समाप्ति

BY

Arihanta Industries

- BHRINGRAJ
- AMLA
- REETHA
- SHIKAKAI

100 ML



15 ML



ULTIMATE HAIR SOLUTION

NO ARTIFICIAL COLOR FRAGRANCE CHEMICAL

KESH VARDAK SHAMPOO

The complete solution of all hair problems:

- Prevent hair fall and make hair follicle strong.
- Promote hair growth.
- Free from all artificial & harmful chemicals like., SLS.
- 100% pure ayurvedic shampoo.
- Suitable for all hair types.



ORDER ONLINE @ :

amazon

arihanta.in